वे बातें जो होनी हैं

रिआल्टो कैलीफोर्निया, यू. एस. ए.

65-1205

1

भाई बून और यह मड़ली,ये मेरे लिए यह निश्चय ही, बड़े ही सौभाग्य की बात है, कि मैं सैन बरनाडीनो में फिर से वापस आया हूँ। यह स्थान बीते हुए दिनों की अनेक महान स्मृतियाँ संजोय हुए है। और यह सुनना, कि हमारा यहाँ पर आने का अभी तक जीवित प्रभाव पाया जाता है, क्यों, निश्चय ही, यह आपको प्रसन्नता की अनुभूति कराता है, कि प्रभु ने ही वर्षों पहले इस ओर हमारा मार्ग दर्शन कराया था।

मैं अभी हाल ही में बाहर उस स्थान पर बैठा हुआ था जहाँ मोटरगाड़ियाँ इत्यादि खड़ी की जाती हैं, और मैं उन घटनाओं में से किसी एक घटना को स्मरण करने की चेष्टा कर रहा था जो घटित हुई थी। फिनलैंड़ में..(मेरे फिनलैंड के अभियान पर).. श्रीमती आइजैकसन मेरी अनुवादक थीं, और जब मैं बस फिनलैंड़ को छोड़कर जा ही रहा था, तो वो मेरी कार के पास आयीं, और बोलीं, "आप फिनलैंड़ की आवाज़ हैं।" और मझे विस्मय है, कि क्या श्रीमती आइजैकसन यहीं आसपास रहती हैं। मैं नहीं जानता हूँ। मैं सोचता हूँ, कि हो सकता है, कि श्रीमती आइजेकसन आज रात्रि यहाँ पर मौजूद ना हो, हो सकता है, कि वे यहाँ पर हों? और वो फिनलैंड़ की वासी हैं।

2

तत्पश्चात् जो विशेष बात मुझे स्मरण आयी वह उस नौकरानी के बारे में थी जो जलपानगृह में नौकरानी थी, जहाँ मैं भोजन करता था। वह जलपानगृह यहीं आसपास है, लोग उसे एन्टर्लस होटल कहते हैं। मेरा यकीन है, कि उसका यही सही नाम है। वह बेचारी स्त्री....मैं उसके साथ प्रार्थना कर रहा था। वह बड़ी ही भली स्त्री थी; पर वह एक मसीही नहीं थी। मैंने उसे सभा में आमन्त्रित किया था। और वह एक बच्चा खो चुकी थी, और मेरा विचार है, कि वह और उसका पति अलग हो चुके थे।

और हम प्रार्थना कर रहे थे, कि वह अपने पति से सुलह कर ले, या वे एक दूसरे से सुलह कर लें। अतः मुझे हैरत होती है, कि क्या वह स्त्री यहाँ पर मौजूद हो सकती है.....समझे? वह... और तब एक और जो घटना घटित हुई थी, वह यह है, कि एक छोटे से बच्चे को यहाँ पर कहीं से (दिन भर के लम्बे सफ़र की दूरी से) लेकर आया गया था; और वह बच्चा मर चुका था, और वह बच्चा अपनी ही माँ की बाँहों में लेटा हुआ था, और वह यहाँ पर फिर से जिन्दा हुआ था। क्या वह....क्या वह व्यक्ति यहाँ पर उपस्थिति है? और मेरा विश्वास है, कि वह ऊपरी प्रांत से—कहीं आसपास से ही आया था....जो यहाँ से ऊपर है। और उसकी माँ और उसके पिता ने सारी रात भर मोटरगाड़ी चलायी। और वह माँ उदासी सहित अपने मरे हुए बच्चे को लिये हुए वहाँ पर बैठी हुई थी; और मैंने सोचा, ऐसा विश्वास! अगर मैं संसार का सबसे बड़ा ढ़ोंगी होता, तो परमेश्वर ने इस माँ के विश्वास को सम्मानित किया होता। मैंने उस छोटे से बच्चे को अपने हाथों में इस तरह से उठाकर प्रार्थना की; और उस बच्चे में गर्माहट आ गई, और वह हरकत करने लगा, और उसने अपनी नन्हीं नन्हीं आँखें खोलीं। मैंने उसे वापस उसकी माँ को सौंप दिया। वे यहाँ पर कहीं से आये थे। हालांकि मैं यह नहीं सोचता हूँ, कि वे पिन्तेकोस्तल थे, वे तो बस...मैं सोचता हूँ, कि वे किसी तथाकथित कलीसिया से थे....मैं यह भी नहीं जानता हूँ, कि वे मसीही

थे, या नहीं। मैंने उनसे यह बात । कदाचित न पूछी थी। मैं तो उस छोटे बच्चे के फिर से जिन्दा हो जाने के कारण बहुत ही ज्यादा हर्षित था।

भाई बून तब से बहुत सी बातें हो चुकी हैं, लेकिन हम अभी भी उसी परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं जो कल, आज, और युगायुग एक सा ही रहता है।

3

मैं बस चारों ओर दृष्टि डाल रहा हूँ, और मैं भाई लेरॉय कोप्प को यहाँ पर बैठा हुआ देख रहा हूँ। ऐसा पहली बार है, कि मैंने उन्हें बहुत समय के बाद देखा है। (भाई ब्रन्हम भाई कोप्प से बातचीत करते हैं-सम्पा.) पॉल, यह सही है, कि लेरॉय आपके पिता थे, यह सही बात है। ओह, मेरे परमेश्वर, रूस! खैर, वह था....मैं जानता हूँ, कि यदि यह साहसी यौद्धा वहाँ पर है, तो वह वहाँ पर महाराजा के काम पर ही लगा हुआ है। सो मैं यहाँ पर होने के लिए और इस युवा सेवक से, जो यह कह रहा था, कि वह उस सेवकाई से जो हमारी यहाँ पर रहते हुए थी, प्रेरित हुआ था, सुनने के लिए निश्चय ही आनन्दित हूँ। यह क्या ही महान रोमांच है।

और अब मैं विश्वास कर रहा हूँ, कि हम जानते हैं, कि हमारे पास है...लोग खड़े हुए हैं, और हम उन्हें बहुत ज्यादा देर तक रोक कर नहीं रखेंगे। हमें ये बड़ी बड़ी चंगाई सभाऐं स्मरण हैं।

4

अब, मैं समझता हूँ, कि यहीं पर कही आसपास पड़ोस ही में एक भाई-भाई लेरॉय जेनकिन्स एक चंगाई-अभियान कर रहा है। मैं सोचता हूँ, कि यह सही बात है। अतः मैं प्रभु का अत्याधिक धन्यवादित हूँ, और विश्वास कर रहा हूँ, कि प्रभु उसे आशीषित कर रहा है, और उसे उत्तम अति उत्तम सभा प्रदान कर रहा है। यह है, कि....

मैं इस प्रकार की कलीसिया में आने के लिए आज रात्रि वास्तव में एक सम्मान की बात अनुभव करता हूँ। मुझे हमेशा ही उन सभागारों की अपेक्षा कलीसिया(चर्च) के अंदर बहुत ही अच्छा लगता है। अब, मैं उन सभागारों के बिलकुल भी विरोध में नहीं हूँ। परन्तु आप जानते हैं, कि मैं....हो सकता है, कि यह एक अंधविश्वास हो, या यह मुझे सच्चाई के जैसा ही लगता हो। देखिए, वे...आप उन सभागारों में जाते हैं जहाँ मल्लह-युद्ध, कुश्तियाँ, हास्यनाटक, और इसी तरह का सब कुछ चलता रहता है, और ऐसा लगता है, कि मानो उन स्थलों के चारों ओर दुष्ट आत्माएँ टिकी हों। अब, हो सकता है, कि यह एक अंधविश्वास हो, पर यह है नहीं। यह है....परन्तु अक्सर ऐसा होता है, कि जब आप किसी गिरजे में आते हैं, जहाँ एक आत्मिक मंड़ली होती है, तो आप वहाँ पर वैसे ही और भी ज्यादा स्वतन्त्रता महसूस करते हैं जैसा कि आप यहाँ पर करते हैं। वहाँ पर कुछ ऐसा है, कि परमेश्वर की उपस्थिति वहाँ पर होती है....?...यह बिलकुल अलग ही लगती है। मैं नहीं जानता हूँ, कि भवन का क्या प्रभाव पड़ता है, परन्तु यह तो वह है जहाँ लोग जमा होते हैं। वास्तव में वे वाले लोग ही किसी दूसरे स्थान पर हो, परन्तु वे उन बुरे स्थलों पर हों। हो सकता है, कि यह मेरे सोचने का ढंग हो, परन्तु कुछ भी हो, मैं आज रात यहाँ पर होने के लिए आनिन्दत हूँ।

5

और अब, हम आपको बहुत ज्यादा देर तक रोक कर नहीं रखना चाहते हैं, क्योंकि लोग खड़े हुए हैं। और कल रात्रि को हम कहीं और किसी जगह जा रहे हैं। मैं यह भी नहीं जानता हूँ, कि यह कहाँ पर है। वह इसी जगह के समीप है, हम कल रात्रि की सभाओं के लिए ऑरेन्ज़ शो

ओडिटोरियम जा रहे हैं। मैं था...यह एक बीच का है....मैं बिजनैसमैन..(फुल गोस्पल बिजनेसमैन समूह) के लिए एक दौरे पर बोल रहा होऊँगा, और मुझे उनके लिए संसार में चारों ओर बोलने का सौभाग्य मिला है। और अतः यहाँ पर हमें हमारे एक प्रिय मित्र ने आमन्त्रित किया है। और आज रात्रि हम यहाँ पर एकत्र होने के लिए आनन्दित हैं।

अब इससे पहले कि हम बाइबिल खोलें...अब देखिए, कोई भी वह व्यक्ति जिसके पास शारीरिक ताकत है, वह इसे इस प्रकार खोल सकता है(समझे?) परन्तु यह तो पवित्र आत्मा ही है जो हमारे लिए वचन खोलता है, जो हमारी समझ खोलता है और पवित्र वचनों का खुलासा करता है। मैं बाइबिल पर विश्वास करता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ, कि यह परमेश्वर का वचन है। और मैं विश्वास करता हूँ, कि किसी दिन पृथ्वी और पृथ्वी के लोगों का न्याय इसी वचन के द्वारा ही होगा। अब, ऐसा है... हो सकता है, कि यह बात अजीब सी लगती हो। अब, बहुत से हैं जो इस विचार से असहमत है।

6

अधिक समय नहीं हुआ है, कि मैं अपने एक निष्ठावान मित्र से, जो कि कैथोलिक है, बातचीत कर रहा था, और उसने कहा था, "परमेश्वर जगत का न्याय कैथोलिक कलीसिया के द्वारा करेगा।" यदि ऐसा ही है, तो यह कौन सी कैथोलिक कलीसिया है जिसके द्वारा ऐसा होगा? समझे? यदि वह इसका न्याय मैथोडिस्ट के द्वारा करता है, तो फिर बैपटिस्ट का क्या होगा? समझे? और यदि वह इसका न्याय किसी एक के द्वारा करता है, तो दूसरी तो नाश ही हो जायेगी। अतः वहाँ पर बहुत ज्यादा गड़बड़ी है। परन्तु हमें तो बाइबिल का अध्ययन करना चाहिए, कि हम अपना सत्य कथन ढूंढ़ सकें, और बाइबिल कहती है, कि परमेश्वर इस जगत का न्याय यीशु मसीह के द्वारा ही करेगा। और वह वचन है; संत यूहन्ना 1: "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। और वचन देहधारी हुआ और उसने हमारे मध्य में डेरा किया..".और इब्रानियों 13:8 कहता है, कि वह कल, आज, और युगानुयुग एक सा है।" ओर में विश्वास करता हूँ, कि यह सच है।

अब, मैं इस पर विश्वास करता हूँ, कि....

7

परमेश्वर, आरम्भ में ही अनन्त परमेश्वर होने के कारण...वह सीमित है..या वह असीमित है, वरन हम सीमित हैं। उसकी समझ तो अत्यन्त विशाल है; हम अपने छोटे से सीमित मस्तिष्क से उसकी महान अनन्त बुद्धि नहीं समझ सकते हैं। परन्तु इसी कारण जब वह कुछ कहता है, तो हो सकता है, कि हमें पवित्र वचनों में उसे किसी बात को कहते हुए सुनना बड़ा ही अजीब सा लगता हो, परन्तु उस बात को तो घटित होना ही होता है। मैं विश्वास करता हूँ, कि उसकी बातें कभी नहीं टलेंगी; यही कारण है, कि मैं विश्वास करता हूँ, कि परमेश्वर जानता है, कि हम अपने इस छोटे से व सीमित मस्तिष्क के द्वारा उसकी महान समझ का बखान नहीं कर सकते हैं। वह तो स्वयं ही अपने वचन का अनुवाद करता है। उसे किसी अनुवादक की कोई आवश्यकता नहीं है। वह उस वचन को अपने ही समय में प्रमाणित करने के द्वारा अपने वचन का अनुवाद करता है।

8

मैं विश्वास करता हूँ, कि परमेश्वर आरम्भ में...नूह उस दिन के लिए वचन था, क्योंकि उसका संदेश ही उस दिन के लिए परमेश्वर का वचन था। अब देखिए, उसके बाद मूसा आया।

अब, मूसा नूह का वचन नहीं ले सकता था। वह एक नाव नहीं बना सकता था, और उसको मिस्र में नील नदी में तैरा कर लोगों को प्रतिज्ञा किये देश तथा इत्यादि इत्यादि में लेकर नहीं जा सकता था। उसके सन्देश ने नूह के दिनों में काम न किया होता, वह तो केवल परमेश्वर के वचन का भाग ही था जिसे मूसा के द्वारा सत्य प्रमाणित होना था। ना ही यीशु के पास मूसा वाला वचन (सन्देश) हो सकता था। और ऐसे ही लूथर कैथोलिक कलीसिया का वचन ज़ारी नहीं रख सकता था। वैसली लूथर का वचन ज़ारी नहीं रख सकता था। और पिन्तेकोस्तल मैथोडिस्टों वाला वचन लेकर नहीं चल सकते थे। वे...देखिए, कलीसिया तो विकसित हो रही है। यहाँ पवित्रशास्त्र में हर एक युग के लिए वचन ठहराया गया है। यहाँ इस वचन में हर एक काल ठहरा हुआ है। यही कारण है, कि परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा अपना वचन प्रकट कर रहा है, और स्वयं उसकी पहचान करा रहा है, और दिखा रहा है, कि यह उसका ही वचन है जो उस दिन में पूरा हुआ है जिसमें उसके पूरा होने की प्रतिज्ञा की गई थी।

9

यीशु ने ऐसा ही कहा था। उसने कहा था, "यदि तुम मेरी प्रतीति नहीं कर सकते हो, तो उन कामों की ही प्रतीति करो जिन्हें मैं करता हूँ; क्योंकि ये ही वे थे जो इस बात की गवाही देते थे, कि वह कौन था। समझे? अगर किसी ने वचन जान लिया होता....अब, वह इतने अज़ीबो-गरीब ढंग से विचित्र ढंग से आया था, कि लोग उस पर विश्वास नहीं करना चाहते थे, क्योंकि वह मनुष्य होकर स्वयं अपने को परमेश्वर बना रहा था। अतः वह तो परमेश्वर ही था जो उस रूप में था। परमेश्वर मसीह में था और जगत का अपने से मेल-मिलाप कर रहा था। और कोई भी उन कामों को जिन्हें वह करता था, यदि परमेश्वर उसके साथ न होता, तो नहीं कर सकता था, जैसाकि हम जानते हैं, कि नीकुदेमुस ने ऐसा ही कहा था, कि फरीसियों का सारा का सारा समाज ऐसा ही विश्वास करता था।

अब हम जानते हैं, कि वह वचन.....काश उन्होंने वचन जान लिया होता.....उसने कहा था, "यदि तुम ने मूसा को जाना होता, तो तुम मुझे भी जानते, क्योंकि मूसा ने मेरे ही बारे में लिखा था।" और हम देखते हैं, कि....यदि उन्होंने पवित्रशास्त्र में पीछे दृष्टि डालकर देखा होता, तो उन्होंने यह देख लिया होता, कि मसीह को क्या करना था; और वे प्रकटीकरण के द्वारा जान लेते, कि परमेश्वर मसीह के द्वारा जगत का अपने से मेल-मिलाप कर रहा था और जितनी भी प्रतिज्ञाएं मसीह के बारे में थीं, वह उन सभों को पूरा कर रहा था, और वह उन सब कामों को कर रहा था जो मसीह को करने थे। यीशु ने उस वचन की गवाही दी, और वह उस वचन को उस दिन के लिए जीवन्त बना रहा था। और मैं विश्वास करता हूँ, कि आज जिस दिन में हम रह रहे हैं, ठीक वैसी ही बात है, परमेश्वर अपने वचन को प्रमाणित करने के द्वारा, कि जो उसने करने के लिए कहा था, कि क्या करेगा, कर रहा है, अपने वचन की गवाही दे रहा है।

10

अब हम जानते हैं, कि यह उद्धार का दिन है, जब परमेश्वर मनुष्य को-पापमय जीवन से सेवकाई के जीवन में बुला रहा है।

और इस दिन में परमेश्वर ने ऊँचे पर से अपना आत्मा उंडेला है, और इस दिन की सेवकाई में महान चिन्ह और आश्चर्यकर्म इसके साथ साथ हो रहे हैं। यही वह दिन है जब अगली और पिछली बारिश एक साथ हो रही है। और हम जानते हैं, कि बड़े बड़े चिन्ह और आश्र्चकर्म तो होने ही हैं, जिन्हें बड़ी बड़ी नामधारी कलीसियाओं में तो ठुकरा दिया गया है, परन्तु मैं इन खुले हुए द्वारों के लिए बड़ा ही धन्यवादित हूँ, जिनके अंदर मुझे जाना होता है; और उन्हें उस प्रेरणा

को देना होता है जैसे यहाँ पर हमारे युवा पास्टर हैं, उसे उन्हें देना होता है, जो उन से करवाती है...जैसे कि मैं बूढ़ा होने लगा हूँ, और मैं जानता हूँ, कि मेरे दिन गिने हुए हैं, और अब यह जानता हूँ, कि ये युवा पुरूष इस सन्देश को ग्रहण कर सकते हैं, और इस सन्देश को प्रभु के आगमन तक फैला सकते हैं....यदि वह मेरी पीढ़ी में नहीं आता है....जबकि मैं उसे देखने की आशा कर रहा हूँ—मैं हर रोज़ उसकी बाट जोहता हूँ, और दृष्टि लगाये रहता हूँ, अपने आप को उस घड़ी के लिए तैयार किये रखता हूँ।

11

अब जबकि हम अपने सिर झुकाते हैं, और इससे पहले कि हम उसकी पुस्तक पढ़ें, आइये हम रचियेता से वार्तालाप करें। स्वर्गीय पिता, हम आपके धन्यवादित हैं, कि हम आज रात्रि जीवित हैं और इस बड़े नगर में वापस आये हैं। मैं यहाँ पर पर्वतों की रमणीय श्रृंखलाओं में बैठे हुआ ऊपर देख रहा हूँ, और मैं बर्फ तथा ठीक इस समय में सन्तरे की कलिकाओं को खिलते हुए देख रहा हूँ; आपने हमें क्या ही शानदार जगत रहने के लिए दिया है। और हम देखते हैं, कि मनुष्य ने इसे कैसे क्षति पहुँचायी है, और इस जगत में आचरण किया है, पिता, इससे हम स्वयं लज्जित हो उठते हैं। आज रात्रि हम यहाँ पर अपने प्रयासों को आगे रखने के लिए हैं, कि यह यत्न करें, कि लोगों को वह महान काम दिखाये जो परमेश्वर ने किया है, और यह जानें, कि इससे भी परे कहीं सर्वश्रेष्ठ वस्तु है। पिता, जबकि हम आपके वचन को पलटते हैं, और उसे पढ़ते हैं, तो होने पाये, कि आज रात्रि हम इसे देखने पायें। पिता, हम इसे पढ़ तो सकते हैं, परन्तु पवित्र आत्मा ही प्रकाशन के द्वारा इसे हम पर प्रकट करे। हम इसे यीशु के नाम में माँगते हैं। आमीन!

12

अब, शायद आप इन लेखों को लिख लेना चाहते हैं, और मुझे सेवकगण के साथ पवित्र वचन पढ़ना है जैसा कि वे अक्सर इसे पढ़ते हैं....और ऐसा वर्षों पहले हुआ करता था, कि मुझे वचनों के लेखों तथा दूसरी बातों को लिखने की आवश्यकता नहीं होती थी, लेकिन तब से मैं बूढ़ा हो गया हूँ। देखिए, मैं अभी हाल ही में उस समय से पच्चीस वर्ष और बिता चुका हूँ—उस बात को पच्चीस साल हो गये हैं। अतः इससे स्मृति थोड़ी सी गड़बड़ा जाती है। परन्तु मैं अभी भी हर एक उस बात को जो मैं उसके वचन में करना जानता हूँ थामने का यत्न कर रहा हूँ, जब तक कि वह मुझे बुला नहीं लेता है।

13

अब, आइये हम संत यूहन्ना का 14वाँ अध्याय निकालें। यह एक चिरपरिचित वचन का लेख है जिससे आज रात्रि हम अपना एक विषय निकालना चाहते हैं-यदि प्रभु की ऐसी इच्छा है। लगभग सारे लोग वचन के इस लेख को जानते हैं। यह ऐसा प्रतीत होता है, कि दफनाये जाने की रस्म पर इसका अनेक बार उपयोग होता है। यदि मैं कभी दफन किये जाने की रस्म की सभा पर प्रचार करना चाहूँगा, तो वह इस जगत के दफनाये जानेवाली सभा होगी। इसे मरने दे और फिर से जन्म पाने दें। अब आइये, संत यूहन्ना का 14वाँ अध्याय 1 से 7 पद तक पढे ।

मेरा विश्वास हैं, कि मैंने इसे यहाँ पर रेखांकित किया हुआ है। तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो।

मेरे पिता के घर में बहुत से स्थान *(राजभवन)* हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने के लिए जाता हूँ।

और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा, कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।

और जहाँ मैं जाता हूँ तुम वहाँ का मार्ग जानते हो।

थोमा ने उससे कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते, कि तू कहाँ जाता है? तो हम मार्ग कैसे जान सकते हैं?

यीशु ने उससे कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।

यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते; और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है।

हो ने पाये प्रभु अपने पढ़े गये वचन पर अपनी आशीष प्रदान करे; और जैसे जैसे हम आगे बढ़ते हैं हम इसका फिर से समय समय पर हवाला देना चाहते हैं; जबकि हम कलीसिया के लिए मात्र एक छोटा सा मूल पाठ बोलना चाहते हैं।

14

गत रात्रि को मैं यूमा एरिजोना में था, जहाँ इस समय मेरा घर है...जब मैं पिछली बार यहाँ पर था, तो मैं जैफरसनविले इन्डियाना में रहा करता था। और अब मैं उस दर्शन के द्वारा जिसने मुझे कई वर्ष पहले एरिजोना में भेजा था, एरिजोना में रह रहा हूँ। और इस समय हम वहीं पर निवास करते हैं। वहाँ पर मेरे पास कोई कलीसिया नहीं है। भाई ग्रीन ने, जो कि भाई यहाँ पर हमारे साथ हैं, वहाँ पर एक टेबरनिकल की स्थापना की जहाँ पर असम्बेली ऑफ गॉड संस्था का गिरजा हुआ करता था— डाउनटाउन में एसेम्बलयों वालों....का एक गिरजा हुआ करता था....और उनका विलेय हो गया.... और मैं सोचता हूँ, कि वे सब भाई ब्रूक और भाई गिलमोर के साथ जा मिले थे, और उन्होंने इस गिरजे को खुला छोड़ दिया था, और भाई पैरी ग्रीन टेक्सस से वहाँ आये और उन्होंने उस स्थान को ले लिया। भाई पैरी ग्रीन हमारे साथ ही जुड़े हुए हैं। हम यह जानकर प्रसन्न हैं कि भाई पैरी ग्रीन ने इस गिरजे को जो बंद हो चुका था, फिर से खोला है।

15

और कल रात जब मैं यूमा में क्रिसचियन बिजनेसमैन ऐसोसिऐशन के लिए बोल रहा था, तो मैंने "रेपचर अर्थात् स्वर्ग पर उठाया जाना", नामक विषय पर बोला था। अब, हो सकता है, कि एक सभागार में बोलने के लिए यह एक विचित्र विषय रहा हो, परन्तु वहाँ पर अधिकाशः लोग मसीही थे। और ठीक ऐसा ही इस प्रकार के अभियानों पर या कलीसिया में होता है। मैं कह सकता था, "अब, आप में से कितने मसीही हैं?" और शायद सारे के सारे हाथ ऊपर उठ जाते। आप एक मसीही हैं। और यदि ऐसा ही है, कि हम मसीही हैं, तो मैं सोचता हूँ, कि हमें एक प्रकार से आगे चलकर इसका ध्यान दिलाना चाहिए। हमें बस इस पर अन्दाज़ा नहीं लगाना चाहिए; हम पर यह प्रकट हो चुका है, कि हमारा गन्तव्य स्थान क्या होगा।

और फिर आज रात्रि मैं इसी पर बोलना चाहता हूँ। और मेरा विषय यह रहेगाः वे बातें जो होनी हैं।" अब, गत रात्रि मैंने "स्वर्ग पर उठाया जाना' नामक विषय पर बोला था, और आज रात्रि मैं इस विषय पर बोलना चाहता हूँ, ताकि मैं इसे गत रात्रि के ही संदेश के साथ समायोजित कर सकें। अब, हम जानते हैं, कि एक स्वर्ग पर उठाया जाना होने वाला है। यह भविष्य में होगा।

16

अब, यीशु ही यहाँ पर इस विषय पर बोल रहा है....वह हमारे लिए एक स्थान तैयार करने के लिए पहले से ही जा चुका है। उसने कहा था, "तुम्हारा हृदय व्याकुल न हो।" अब, वह यहूदियों से बातें कर रहा था। उसने कहा था, "अब, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो। जैसे तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, वैसे ही मुझ पर भी विश्वास रखो, क्योंकि मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।" समझे? और परमेश्वर....दूसरे शब्दों में उसने कहा, "मैं और मेरा पिता एक ही है। मेरा पिता मुझ में ही वास कर रहा है; और तुम जो मुझे करते हुए देखते हो, यह मैं नहीं हूँ जो इन कामों को करता है, यह तो मेरा पिता है जो मुझ में वास करता है जो इन कामों को करता है।" और परमेश्वर मसीह में होकर संसार का मेलमिलाप स्वयं अपने साथ कर रहा था।

17

उन यहूदियों के लिए जिन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी यह विश्वास करना सिखाया जाता रहा था, कि एक महान परम-आलौकिक परमेश्वर है, यह सहज था। परन्तु उनके लिए यह समझना, कि परमेश्वर नीचे आ गया है और वह स्वयं को अपने पुत्र यीशु मसीह के व्यक्तित्व में से होकर प्रकट कर रहा है—परमेश्वर ने एक मानवीय देह में डेरा किया है- उनके लिए इसे समझना काफी कठिन बात थी। परन्तु उसने कहा था, "जैसा तुमने परमेश्वर पर विश्वास रखा है, वैसा ही मुझ पर भी विश्वास रखो। क्योंकि मेरे पिता के घर में रहने के बहुत से राजभवन हैं, और मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने के लिए जाता हूँ।" तब यीशु के जीवन का यहाँ इस पृथ्वी पर अंत होने जा रहा था। और उसने लोगों को बड़े बड़े चिन्हों और आश्चर्यकर्मों द्वारा तथा बाइबिल के उन हवालों के द्वारा जिनका उसने स्वयं अपने विषय में हवाला दिया था, दिखा दिया था, और साबित कर दिया था, कि वो ही यहोवा था जो देह में प्रकट हुआ था। और उसने प्रमाणित किया था, कि वही परमेश्वर था जो प्रकट हुआ था। अब, उसने कहा था, जब तुम यह देखते हो, कि मेरे जीवन का अंत हो रहा है, तो इसका अंत एक उद्देश्य के लिए ही हो रहा है। और मैं तुम्हारे लिए एक स्थान तैयार करने के लिए जा रहा हूँ, कि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी रहो।" यही कारण था, कि यीशु अपने शिष्यों को वह बता रहा था, कि इस जीवन का अंत मृत्यु के साथ नहीं हो जाता है।

18

अब, जैसाकि मैं कह रहा था, कि यह याद रखें, कि यह दफनाये जाने के समय पढ़ा जानेवाला मूल पाठ है, ...मौत हमारे ठीक सामने मौजूद रहती है और हम नहीं जानते हैं, कि क्या...हो सकता है, कि आज रात्रि इस भवन में कुछ ऐसे हों जो यहाँ से इसी शारीरिक जीवन में बाहर न निकलें। यह कैसा अनिश्चित है। यह हो सकता है, कि युवा व सेहतमंद मनुष्य अब से पाँच मिनट में इसी भवन में एक मरा हुआ शव हो। यह सच है। और फिर यह भी हो सकता है, कि अब से पाँच मिनट के बाद हम में से हर कोई महिमा में हो। हम बस नहीं जानते हैं। यह तो सिर्फ परमेश्वर के ही हाथों में है। यीशु ने कहा था, कि वह स्वयं भी नहीं जानता है, कि वह घड़ी कब होगी; परन्तु वह तो सिर्फ पिता के ही हाथों में ही थी।

अब, लेकिन वह उन्हें यह बता रहा था, कि मृत्यु के बाद भी जीवन है; क्योंकि उसने कहा था, "मैं जाकर एक जगह तैयार करता हूँ,"—जिसका अभिप्राय है, उन्हें ग्रहण करना, जो यह दर्शाता था, कि जीवन के अंत के बाद एक जीवन है—(वह उन से यही कह रहा था।) और यह जानकर हम सभों कोक्या ही शान्ति मिलनी चाहिए, कि जब यह जीवन समाप्त हो जाता है, तो एक और जीवन होता है जिसमें हम प्रवेश करते हैं। और ज्यों ज्यों आप बूढ़े होते चले जाते हैं, त्यों त्यों वह आपके लिए और भी ज्यादा वास्तविक बनता चला जाता है। और ज्यों ज्यों आप यह

देखने लगते हैं, कि आपके जीवन के दिन समाप्ति की ओर अग्रसर होते चले जा रहे हैं —ज्यों ज्यों आप इस जीवन के अंत की समीपता में आते चले जाते हैं, त्यों त्यों आप उस महान घटना के लिए तैयार होते चले जाते हैं। यह एक...नहीं....यह तो ठीक इसी जीवन का किसी दूसरे जगत में किसी दूसरे जगत पर लगातार ज़ारी रहना है।

19

यहाँ पर आपका जन्म पूर्वनियोजित था। मैं सोचता हूँ, कि आप इसका विश्वास करते हैं। आप में से हर कोई यह जानता है, कि हमारा जन्म पूर्वनियोजित था। क्या आप जानते थे, कि यहाँ पर आपका अस्तित्व कदापि एक कल्पना मात्र पर या विचार मात्र पर उत्पन्न नहीं हुआ था? हर एक वह वस्तु जो आप देखते हैं, उसे जगत की उत्पत्ति से भी पहले परमेश्वर के द्वारा पूर्वनियोजित कर दिया गया था। अनन्त परमेश्वर इसे जानता था.....अनन्त होने के लिए उसे उन हर एक पिस्सुओं को जो कभी पृथ्वी पर होंगे, और वे कितनी बार अपनी आँख झपकायेंगे, जानना था। वह तो अनन्त है। समझे? आप ऐसे हैं... हमारे छोटे- छोटे मस्तिष्क तो यह नहीं समझ सकते हैं, कि अनन्त का क्या अर्थ होता है। वह तो अनन्त परमेश्वर है; वह सब कुछ जानता है, इसलिए कुछ भी उसके दायरे से बाहर नहीं है।

यदि हम परमेश्वर का वचन जानते हैं, तो हम यह जानते हैं, कि हम कहाँ रह रहे हैं। हम जानते हैं, कि हम किस घड़ी में रह रहे हैं, हम जानते हैं, कि आगे क्या होने वाला है। हम उसे देखते हैं, जो बीत चुका है। और परमेश्वर की पुस्तक यीशु मसीह का ही प्रकाशन है। जो काम उसने कलीसियायी कालों के दौरान किये वे सब प्रकाशितवाक्य में पाये जाते हैं। और इसके बाद जो उसकी प्रतिज्ञाएँ आनी हैं.....अतः उसकी सारी प्रतिज्ञाएँ सच्ची हैं। परमेश्वर बिना पुष्टि किये कोई वचन नहीं बोल सकता है। प्रत्येक वह शब्द जो वह कहता है, उसे घटित होना ही होता है।

जगत की उत्पत्ति से भी पहले ही...

20

कुछ लोग जब यह कहते हैं, "परमेश्वर स्वयं अपनी बात को दोहराता है", तो वे उत्पत्ति में गड़बड़ी कर डालते हैं। जी नहीं, यह तो आपकी ना समझी है। देखिए, आरम्भ में परमेश्वर ने कहा था, "ऐसा हो जाये! ऐसा हो जाये! ऐसा हो जाये! ऐसा हो जाये!" यहाँ तक था, कि तब पृथ्वी अंधकार में बैडौल पड़ी हुई थी, जब उसने कहा था, "उजियाला हो जाये", तो शायद ऐसा हो हुआ हो;, कि इससे पहले कि उजियाला प्रकाशित होता, सैकड़ो वर्ष बीत गये हों; परन्तु जब उसने इसे कह दिया, तो इसे तो घटित होना ही था। इसे तो उसी प्रकार वैसा ही होना अवश्य था। समझे? और उसने अपना वचन बोला था। वे बीज जल के नीचे पड़े हुए थे। जब उसने पृथ्वी सुखा दी थी, तो वे बीज उग आये थे। जो वह कहता है, उसे अवश्य ही घटित होना होता है।

उसने भविष्वक्ताओं के द्वारा कहा था...मैंने इसका गत रात्रि हवाला दिया था। जैसे कि हम यशायाह का उदाहरण लें, उसने कहा था, "एक कुंवारी गर्भवती होगी।" कौन उस इंसान के बारे में सोचेगा, जिसने लोगों के बीच में इस प्रकार की बात सोची हो, कि— एक कुंवारी गर्भवती होगी। परन्तु चूंकि वह...भविष्यद्वक्ता तो परमेश्वर को प्रतिबिम्बित करनेवाला होता है। वह तो ऐसा बना होता है, कि वह अपने निज शब्दों को नहीं बोल सकता है, उसके पास तो परमेश्वर के ही शब्द होते हैं जिन्हें वह बोलता है। वह तो बस प्रतिबिम्बित करनेवाले के जैसा ही होता है। और वह परमेश्वर का मुँह होता है। और यही कारण था, कि उसने कहा था, "एक कुंवारी

गर्भवती होगी।" हो सकता है, कि वह शायद इसे न समझ सका हो, परन्तु परमेश्वर ने ही इसे उसके द्वारा बोला था ; क्योंकि उसने प्रतिज्ञा की थी, कि वह तब तक कुछ नहीं करेगा जब तक कि वह उसे अपने दास-भविष्यद्वक्ताओं पर प्रकट नहीं कर देगा। तब जब उसने इसे कहा था, तो उसने इसे इसके घटित होने के आठ सौ वर्ष पहले ही कहा था; परन्तु इसे तो घटित होना ही था।

अखिरकार, परमेश्वर के ये शब्द एक कुंवारी के गर्भ में दृढ़तापूर्वक स्थान पाते हैं, और वह गर्भवती होकर इम्मानुएल को जन्म देती है। लिखा है, कि "हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक बालक दिया गया है। और उसका नाम अद्भुत युक्तिकरनेवाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।" उसे तो इसी प्रकार होना था, क्योंकि उसे तो परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ता के मुँह से बोला था। और परमेश्वर की समस्त बातों को पूरा होना ही है, इसलिए हम जानते हैं, कि यीशु एक जगह तैयार करने के लिए गया हुआ है, ताकि अपने लिए एक लोग को प्राप्त करे। वे लोग कौन हैं; मैं आशा करता हूँ, कि आज रात्रि हम उन लोगों का ही भाग हैं। यदि ऐसा नहीं है, तो मेरे मित्र, परमेश्वर ने एक मार्ग बनाया है, एक ऐसी अवस्था बनायी है, कि यदि आप चाहें तो आप उसमें शामिल हो सकते हैं। आप तो अपनी स्वेच्छा पर छोड़े गये प्राणी हैं और आप जैसा चाहे वैसा आचरण व्यवहार कर सकते हैं।

परन्तु अब आप ध्यान दें। अब, उस जगत में जो आनेवाला है...एक ऐसा जगत है जो आनेवाला है।

21

मैंने कहा था, कि जैसा आपका यहाँ पर जन्म हुआ, आपको तैयार किया गया था; परमेश्वर जानता था, कि आप यहाँ पर होंगे। और अब आप जानते हैं—यहाँ तक कि परमेश्वर उन कामों को भी जानता था जो आपके मातापिता ने किये...अब, देखिए, लोग सोचते हैं, यह पीढ़ी दर पीढ़ी आगे नहीं बढ़ता है, लेकिन ऐसा ही है।

इब्रानियों की पुस्तक में यह दिया हुआ है—मेरा विश्वास है, कि यह इब्रानियों का 7वाँ अध्याय है जहाँ पौलुस यह कह रहा है..(पौलुस वहाँ लिखता है; वह लेखक है जैसाकि मैं इसका विश्वास करता हूँ)—वह उस एक..एक महान घटना के विषय में कह रहा है जो अब्राहम के साथ घटित हुई थी, कि जब वह राजाओं का नरसंहार करने के बाद लौटा चला आ रहा था, तो उसने मेल्कीसिदेक को दसवां अंश दिया था। अब, पौलुस कह रहा था, कि जब अब्राहम राजाओं को मारकर लौटा जाता था, तो जब अब्राहम ने मेल्केसिदेक से भेंट की, तो लेवी उसकी देह में था, और फिर उसने यह विश्वास किया, कि जब लेवी अब्राहम की—अपने लकड़ दादा की देह में था, तो उसने भी दसवां अंश दिया था। और वह लोगों....वह उन लोगों को जो उसका वचन नहीं मानते हैं, उनके पापों का दंड़ उनकी संतानों को पीढ़ी दर पीढ़ी देता है।

22

देखिए, परमेश्वर के द्वारा आप सब को पूर्वनियोजित किया गया था। परमेश्वर के साथ कुछ भी संयोगवश नहीं होता है। वह इसके बारे में सब कुछ जानता है। सब कुछ पूर्वनियोजित है; इसकी कई पीढ़ियों पहले ही योजना बना ली गयी थी, ताकि आप आज रात्रि यहाँ पर हो सकें। क्या आप यह जानते थे? आप ज़रा इसके बारे में सोचिए! एक समय आप थे...मैं इसे फिर से दोहराऊँगा—एक समय आप अपने पिता के अंदर थे—आप अपने पिता के जीन्स में थे। अब, वह आपको उस समय नहीं जानता था, ना ही आप उसे उस समय जानते थे। परन्तु आप देखिए,

कि जब आपको पवित्र वैवाहिक सम्बंध के द्वारा अपनी माँ के गर्भ में प्रजनन स्थल में रखा गया, तो उसके बाद ही आप अपने ही पिता की शक्ल-सूरत में एक ऐसे प्रकट व्यक्ति बन गये जो अपने पिता के स्वरूप में होता है। इसके बाद आप एक दूसरे से संगति कर सकते हैं।

23

अब देखिए, केवल एक ही तरीका है जिससे आप परमेश्वर के पुत्र व पुत्री हो सकें....कि आप में अनन्त जीवन हो—और अनन्त जीवन का केवल एक ही रूप होता है; और वह परमेश्वर का जीवन है। अनन्त जीवन का केवल एक ही रूप है, और वह परमेश्वर है। परमेश्वर का पुत्र होने के लिए आपको सदैव ही परमेश्वर के अंदर होना होता है। आपके जीवन का जो जीन है—आज रात्रि जो आपका आत्मिक जीवन है वह तब से पिता परमेश्वर के अंदर था, इससे पहले कि कभी कोई अणु होता। समझे? और आप कुछ नहीं, वरन उस जीवन के जीन का प्रकटीकरण है जो आपका परमेश्वर के अंदर परमेश्वर के पुत्र के रूप में था। अब आप प्रकट हुए हैं—जब उसका वचन आपके अंदर आया, कि आप इस काल को प्रकाशमान करें, तो आप उसके बाद ही प्रकट हुए। और आप परमेश्वर के जीवन को जो आपके अंदर है, प्रकट कर रहे हैं, क्योंकि आप परमेश्वर के पुत्र व पुत्रियाँ हैं। यही कारण है.....क्या आप इसे समझ गये हैं, कि मेरे कहने का क्या तात्पर्य है? समझे? आप हैं...में...अब आप बने हैं... आप आज रात्रि इस कलीसिया में इसीलिए बैठे हुए हैं, क्योंकि यह आपका कर्तव्य है, कि आप परमेश्वर को इस देश और इन लोगों पर, और इन पड़ोसियों पर जिनसे आप जुड़े रहते हैं, प्रकट करें।

आप जहाँ कहीं भी हों, परमेश्वर जानता था, कि आप वहाँ पर होंगे, क्योंकि आप उसके जीन्सों में से एक जीन हैं, या उसके गुण-चरित्रों में से एक गुण-चरित्र हैं। आपको तो होना ही था। यदि कभी आपके पास था....यदि आपके पास अनन्त जीवन है, तो आपके पास हमेशा ही यह अनन्त जीवन था। और परमेश्वर जगत की जेंव रखे जाने से भी पहले यह जानता था, कि आप यहाँ पर होंगे। और जब वचन...या जल.....वचन का धुलाई-मंजाई करनेवाला जल आप पर गिरा, तो आपका एक अस्तित्व-एक व्यक्तित्व में प्रकटीकरण हुआ। अब, आप अपने पिता, अर्थात् परमेश्वर से ठीक वैसे ही संगति कर सकते हैं, जैसे आपकी अपने पृथ्वी वाले पिता से संगति होती है। समझे? आप महाराजा के नागरिक हैं, आप नागरिक नहीं हैं, वरन आप तो जीवते परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ हैं, यदि आपके अंदर अनन्त जीवन वास करता है।

24

अब देखिए, फिर यदि ऐसा ही है, तो यीशु परमेश्वर की वह परिपूर्णता था जो प्रकट हुई थी। वह परमेश्वरत्व की परिपूर्णता था जिसमें परमेश्वर की परिपूर्णता सदेह वास करती थी; यही कारण था, कि जब वह पृथ्वी पर आया, और देह में प्रकट हुआ, तो तब आप उसके अंदर थे, क्योंकि वह वचन था।

आदि में वचन था,....और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। और वचन देहधारी हुआ, और उसने हमारे बीच में डेरा किया....

वचन देहधारी हुआ था, यही कारण था, कि आप उसके साथ साथ चले थे; जब...

वह पृथ्वी पर था, तो आप उसके अंदर थे। आपने उसके साथ दुख उठाया, आप उसके साथ मरे; आप उसके साथ दफन हुए; और आप उसके साथ जी उठे हैं, और परमेश्वर के प्रकट गुण हैं जो स्वर्गीय स्थानों में बैठे हुए हैं; आप तो पहले ही जी उठे हैं, आप नये जीवन में जी उठे हैं, और अब मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में बैठे हुए हैं। हे कलीसिया, अब इन दिनों में

इसका बहुत ज्यादा मायने है। यह बात हमारे लिए बहुत ही ज्यादा महत्व रखती है, कि हम स्वयं को देखें, कि हमारा स्थान यीशु मसीह में भली भांति सुव्यवस्थित है।

25

अब, यदि हम परमेश्वर के वे गुण-चरित्र हैं, तो हम धार्मिक मतों के द्वारा जीवित नहीं रह सकते हैं, हम नामधारी कलीसियाओं के मतों के द्वारा जीवित नहीं रह सकते हैं; हमें तो वचन के द्वारा ही जीवित रहना चाहिए, क्योंकि दुल्हन तो ठीक वैसे ही दुल्हे का भाग है जैसे कोई भी पत्नी अपने पति का भाग होती है, इसलिए हमें तो वचन रूपी दुल्हन होना चाहिए। और वह वचन रूपी दुल्हन क्या है? दुल्हन ही इस घड़ी का प्रकटीकरण है; कोई धार्मिक मत-सार या नामधारी कलीसिया नहीं, वरन दुल्हन ही परमेश्वर की जीवित भविष्यवाणी है(परम आलौकिक भेदों को बतानेवाला मार्ग है)...वह तो परमेश्वर का जीता-जागता गुण है जो संसार पर परमेश्वर के उन गुणों को जो इस घड़ी में जिसमें हम ठीक इस समय रह रहे हैं प्रकट होने थे, दुल्हन के रूप में प्रकट कर रहे हैं।

मार्टिन लूथर उन गुणों को प्रकट नहीं कर सकता था जिन्हें हम प्रकट करते हैं, क्योंकि वह तो आरम्भ में था; उसे तो फिर से जी उठना था, जैसे कि गेहूँ का दाना भूमि के अंदर चला जाता है।

26

अब, हम इसका फिर से हवाला देंगे। शायद आपने वह पुस्तक पढ़ी हुई है कि जर्मनवासी मेरा उपहास उड़ा रहा था, और उसने कहा था, कि "मैं सब हठधार्मियों का हठधर्मी हूँ।" वह उन सारी बातों के पूरी तरह से खिलाफ था जो परमेश्वर की कहलाती थी। और यहाँ तक कि उस व्यक्ति ने परमेश्वर का भी उपहास उडाया। उसने कहा था, एक परमेश्वर जो लाल सागर को खोल सकता था, और उसने अपने लोगों को बाहर निकाला था; और वही परमेश्वर उन अंधेरे कालों में अपने पेट पर हाथ पर हाथ रखे हुए बैठा रहा था और उसने उन सब लोगों को उन अंधेरे कालों में मरने और दुख सहने दिया था और उन छोटे छोटे बच्चों को शेरों के द्वारा खा जाने दिया था....."

आप देखते हैं, कि सम्पूर्ण योजना; सम्पूर्ण सच्ची कलीसिया का निर्माण दिव्य प्रकाशन पर ही हुआ है। यीशु ने संत मत्ती के 16वें अध्याय में कहा था, "मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रकट की है।" यह क्या था? यह इस बात का प्रकाशन था, कि वह कौन था। और उसने कहा था, "और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर कभी प्रबल न होंगे।" समझे? यह तो इस समय में यीशु मसीह का ही प्रकाशन है; ना कि यह वह है, कि वह किसी दूसरे समय में क्या था; वरन यह तो वह है, कि वह इस समय क्या है....बाइबिल यह प्रकट करती है, कि यह दुल्हन में पूरे डील-डौल में बढ़ता चला जा रहा है; यही कारण है, कि जैसे मसीह के गेहूँ के दाने को भूमि में गिरना था, ठीक वैसे ही दुल्हन को अंधेरे कालों के दौरान भूमि में गिरना था। कोई भी वह बीज जो भूमि में गिरता है उसे मरना चाहिए अन्यथा वह स्वयं अपने को फिर से उत्पन्न नहीं कर सकता है; अन्यथा वह अपना पुर्नात्पादन नहीं कर सकता है। और उस महान सच्ची कलीसिया को जिसकी पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा भेजने के द्वारा स्थापना की गई थी, शहादत सहन करनी थी और वह धूल में चली गई थी—अंधेरे कालों में भूमि के अंदर चली गई थी, ताकि लुथर के काल में फिर से उगे और इन अंत के दिन में यीशु मसीह की दुल्हन के पूर्ण डील डौल के अंदर आ जाये। समझे? कोई ऐसा तरीका नहीं है, कि....

27

यही कारण है, कि दुल्हन स्वर्ग पर उठाये जाने में उभर कर आगे आयेगी; और यह सब कुछ परमेश्वर के द्वारा ही पूर्वनियोजित है, यह सब पहले से ही ठहराया हुआ है। वह आरम्भ से ही हर एक मनुष्य को, हर एक स्थान को जानता था, वह जानता था, कि कौन बैठेगा; वह इसके बारे में सब कुछ जानता था। यह सब पूर्वनियोजित है। परमेश्वर जानता था, कि यह यहाँ पर होगा और जब उसने इसे उस प्रकार से बनाया था, ताकि जब हम वहाँ पर जाते हैं—वह हमारे लिए जगह तैयार करने के लिए जा चुका है—और जब हम वहाँ जायेंगे, तो वह ऐसी तैयार होगी, कि ठीक जैसे वह इस रात्रि भी तैयार है, ठीक जैसे वह इसी घड़ी तैयार है।

यह उसके महान पूर्वज्ञान ने ही-उसने अपने महान पूर्वज्ञान के द्वारा ही इन सब बातों को उसे बताया था। वह सर्वव्यापी है, क्योंकि वह सर्वज्ञाता है;

28

चूंकि वह सर्वज्ञाता है, इसलिए वह सर्वव्यापी है। यही कारण है, कि उसके पूर्वज्ञान के द्वारा...अब देखिए, वह ऐसा नहीं हो सकता है, जैसे पृथ्वी के ऊपर वायु होती है; क्योंकि वह एक वजूद है। वह कोई काल्पनिक गाथा नहीं है, वह तो एक अस्तित्व है। वह तो वास करता है; यहाँ तक कि वह एक भवन में वास करता है। वह एक स्थान में जो कि स्वर्ग कहलाता है, वास करता है, और यही कारण है, कि चूंकि वह सर्वज्ञाता है, इसलिए वह सब कुछ जानता है। फिर यह भी है, कि वह सर्वव्यापी है, क्योंकि वह सब कुछ जानता है।

आप....आप— अब, आप देखिए, आप जन्म से ही बढ़ते चले जाते हैं...जब आप उत्पन्न हुए और इस संसार में मौजूद हुए, तो परमेश्वर जानता था, कि आप संसार में होंगे, और आप जन्म लेने के द्वारा परिपक्वता की ओर विकसित होते चले गये। आपको अपनी स्त्रित्व वाली युवा अवस्था में और पुरूषत्व वाली युवा अवस्था में वे बातें जो बच्चे के जैसे बड़ी विचित्र सी लगती थीं, अब वास्तविक लगती हैं। जब आप बच्चे थे, तो आप इसे नहीं समझ सकते थे, परन्तु अब जब आप व्यस्क(सयाने) हो जाते हैं, तो आप इसे समझने लगते हैं, और आप यह जान पाते हैं, कि सब कुछ बिलकुल ठीक ठीक सिलसिलेवार था। और आप...सच में अब यह आपके लिए कुछ मायने रखता है।

29

ठीक ऐसा ही आपके आत्मिक जन्म के सम्बंध में होता है। जब आप एक छोटे बच्चे होते हैं, तो आप उन कामों को करते हैं, जिन्हें आप नहीं समझते हैं, और आप वेदी पर आते हैं, और अपना जीवन मसीह को देते हैं। आप ऐसे विचित्र काम करते हैं। आपको आश्चर्य होता है, कि आपने ऐसा क्यों किया था। पर कुछ समय बाद जब आप पूरे व्यस्क हो जाते हैं—आप पूर्ण विकसित मसीही के जैसे हो जाते हैं, तो आप इसे समझ जाते हैं। समझे? वहाँ कोई ऐसी चीज होती हे जो आपको उभारती है और आप देखते हैं, कि क्यों आपको इसे करना था। आपका आत्मिक जन्म...आपका स्वाभाविक जन्म आपके आत्मिक जन्म की एक प्रतिछाया होता है। यह कैसे ..कैसे आपके अनुकूल होता है! इस जीवन में जैसे जैसे आप बढ़ते चले जाते हैं सब कुछ सुचारू रूप से ठीक होता चला जाता है, क्योंकि आप तो उसी के लिए बने थे। क्या यह विचित्र बात नहीं थी, कि एक रात्रि आप एक सभागार में-पंडाल की सभा में लड़खड़ाते हुए अंदर आये थे या आप किसी छोटे से गिरजे में किसी एक कोने में थे, और कुछ हुआ था; किसी प्रचारक ने किसी एक विषय पर प्रचार किया था, और आप बस ठीक वेदी पर जाकर गिर पड़े थे? देखा? समझे? परमेश्वर तो यह जगत की उत्पत्ति से भी पहले जानता था। समझे? आपको

यह..यह बात विचित्र लगती है, कि आपने तब ऐसा क्यों किया था; परन्तु अब आप इसे समझते हैं। आप जानते हैं, कि कुछ घटित हुआ था। और यह आपके लिए इस जीवन में बहुत अनुकूल होता है और यह आपके लिए उस जीवन में भी अनुकूल होता है जो आने वाला है। आपको यह जगत और यह जीवन आगे सरकता हुआ लगता है जैसे जैसे आप परिपक्व होते चले जाते हैं। आपको ऐसा लगता है, मानो आपके साथ सब कुछ बिलकुल ठीक ठीक हो रहा है।

30

मैं इस बात का विश्वास नहीं करता हूँ, कि कोई मनुष्य बस यहाँ पर यूँ ही संयोगवश है। अब ज़रा आप सोचें, कि जब आप संसार में आते हैं, तो आपके लिए सब कुछ आपके आगे आगे ही तैयार होता है, या आपके लिए पहले ही से सब कुछ तैयार होता है। मैं बामुश्किल समझ नहीं पाता हूँ, कि कैसे हम सोच सकते हैं, कि वह परमेश्वर जो हमारे लिए इन सारी भली वस्तुओं को तैयार कर सकता है, क्या वह नहीं...हम उस पर भरोसा नहीं कर सकते हैं, कि यदि वह हमें इस दुर्व्यवस्था में लेकर आया, जिसमें हम अब है और उसने यहाँ पर हमारे लिए जीवन की सारी भली वस्तुएं तैयार कीं, तो हम उस पर इससे कितना और अधिक भरोसा कर सकते हैं, कि वह उन सब वस्तुओं को—उन अनन्त वस्तुओं को जो आने वाली हैं तैयार कर सकता है। मैं कहता हूँ, कि यह बड़ा अज़ीब सा लगता है।

31

और मैं...मैं यह नहीं सोच सकता हूँ, कि स्वर्ग एक ऐसा स्थान है जिसके बारे में मेरी माँ बताया करती थी। मेरा विश्वास है, कि कलीसिया उस स्थिति से विकसित हो चुकी है। यह सोचना, कि ऐसा होता है, कि...मैं सोचता हूँ, कि सौ या दा सौ वर्ष प्राचीन लोग यही सोचा करते थे, कि प्रत्येक वह व्यक्ति जो मर जाता था, ऊपर स्वर्ग में चला जाता था, और उसके पास एक वीणा होती थी, और वह ऊपर बादलों पर आसीन हो जाता और वीणा बजाता। अब देखिए, वे जानते थे, कि यही वह एक स्थान है जो स्वर्ग कहलाता है, परन्तु वे...यदि ऐसा ही है.यदि ऐसा ही होता, तो इस पर संगीत के सारे वाद्य हमारे पास होते।..समझे आप? परन्तु हम जो...परन्तु यह उस तरह की जगह नहीं है। यह कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ वीणा बजती हो। मैं यह विश्वास करता हूँ, —विश्वास नहीं करता हूँ, कि बाइबिल इस बात की शिक्षा देती है। परन्तु यह तो एक धारणा या विचार ही था, जो उन लोगों का वचन की परिपूर्णता के अस्तित्व में आने से पहले था, अथवा उन का उन सात मोहरों के खुलने से पहले था, जिनकी इस काल में खुलने की हम से प्रतिज्ञा की गई है। उसके बाद ही हम इसे समझते हैं।

मैं विश्वास करता हूँ, कि स्वर्ग ठीक वैसा ही एक वास्तविक स्थान है जैसे यह एक वास्तविक स्थान है (समझे?), क्योंकि परमेश्वर ने इसी स्थान पर हमारे अंदर आत्मिक विकास आरम्भ किया था। मैं विश्वास करता हूँ, कि स्वर्ग वैसे ही एक वास्तविक स्थान है जैसे यह एक वास्तविक स्थान है। वहाँ ऐसा नहीं होगा, कि हम अनन्तता तक बैठे रहें, और वहाँ पर बस बादल पर ही बैठे रहें। हम यहाँ पर हमेशा ही अपनी वीणा नहीं झनझनाते रहते हैं; परन्तु हम तो एक ऐसे वास्तविक स्थान में जाने वाले हैं जहाँ हम काम करेंगे, जहाँ हम रहेंगे। हम वहाँ पर काम करने जा रहे हैं, हम वहाँ पर आनन्द मनाने जा रहे हैं, हम वहाँ पर रहने जा रहे हैं। हम वहाँ पर जीवन व्यतीत करने जा रहे हैं; अनन्त जीवन व्यतीत करने जा रहे हैं। हम स्वर्ग जा रहे हैं, हम तो परम आनन्द के रमणीय स्थान में जा रहे हैं। ठीक जैसे अदन की वाटिका में आदम और हव्वा ने पाप में पड़ जाने से पहले काम किया और जीवन व्यतीत किया, और भोजन किया, और आनन्द मनाया; हम वहाँ पर अपने इसी मार्ग पर फिर से वापस लौटकर आ रहे हैं। यह सच है, कि पीछे...पहले आदम ने तो हमें पाप के द्वारा बाहर निकलवाया, लेकिन दूसरा आदम

हमें धार्मिकता के द्वारा फिर से अंदर लेकर आया है—और वह हमें धर्मी ठहराता है, और हमें अंदर लेकर आता है।

32

आप लोग जो टेप लेते हैं, उनके लिए यह बात हैं, कि मैं यह चाहता हूँ, कि धर्मी ठहरने पर जो सन्देश है, आप उसका टेप ले लें...और आप जो टेप लेते हैं, क्या आप उसे नहीं लेंगें? मैंने कुछ समय पहले यहीं पर उस पर बोला था। देखिए, इससे पहले कि आप यहाँ पर आयें—इससे पहले कि वे जानें कि आप यहाँ पर आ रहे हैं, आपके पृथ्वी वाले माता-पिता किस प्रकार आपके आगमन की तैयारी करते हैं। अब आप ज़रा इसके बारे में सोचें- आपके पृथ्वी वाले मातापिता...ये पृथ्वी वाले माता-पिता तो केवल स्वर्ग वाले माता-पिता की प्रतिछाया ही हैं। "यदि हम अपनी संतानों को भली वस्तुएं देना जानते हैं, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपनी संतानों को भली वस्तुएं देना कितना अधिक जानता होगा।" यीशु ने ही इन शब्दों को कहा था।

देखिए, वे आपके आगमन की तैयारी करते हैं। वे एक छोटा सा पालना बनाते हैं, या एक छोटा सा लेते हैं...कुछ छोटे छोटे मौज़े, और जूतियाँ, और छोटे छोटे कपड़े, और इसी प्रकार की और दूसरी चीजें खरीदते हैं। वे आपके आगमन की तैयारी करते हैं....इससे पहले कि आप कभी जगत में आते वे तैयारी करते हैं।

33

यीशु वहाँ पर हमारे आगमन के लिए जगह तैयार करने के लिए गया हुआ है।

अब ध्यान दीजिए, उसने कहा था, "मेरे पिता के घर में रहने के बहुत से स्थान (राजभवन) हैं।" या आइये हम...मेरा यह अभिप्राय नहीं है, कि मैं वचन में कुछ जोड़ें, या इसमें से कुछ निकालें, क्योंकि हम ऐसा करने के लिए नहीं है। प्रकाशितवाक्य 22 में कहा गया है, "जो कोई इसमें एक भी शब्द जोड़े या इसमें से एक भी शब्द निकाले", ...परन्तु मैं तो बस यह करता हूँ—मैं ऐसा इसलिए नहीं कर रहा हूँ, कि मैं इसमें कुछ जोड़ें, वरन मैं तो यह बात समझाने के लिए ही कह रहा हूँ। मेरे पिता के घर में विभिन्न प्रकार के रहने के स्थान हैं।" मैं यह विश्वास नहीं करता हूँ, कि जब हम स्वर्ग में पहुँच जायेंगे, तो हम सब बिलकुल एक से ही दिखाई देंगे। मैं इसका विश्वास नहीं करता हूँ, कि वहाँ पर हम सब गोरे और सुनहरे बालों वाले या काले या छोटे हों, या हम सब बड़े हों या हम सब विशालकाय हों। मैं विश्वास करता हूँ, कि परमेश्वर विविधता का परमेश्वर है। संसार इस बात को साबित करता है। उसके पास बड़े बड़े पर्वत और छोटे छोटे पर्वत हैं, उसके पास समतल स्थान हैं, उसके पास रेगिस्तान हैं, उसके पास नाना प्रकार की वस्तुएं हैं, क्योंकि उसने इसे वैसा ही बनाया है जैसा उसने इसे चाहा था और उसने ऋतुएँ: ग्रीष्म, शीत, वसंत,शरद ऋतु बनायी। उसने मौसम बनायें। ये यही दिखाता है, कि वह विविधता का परमेश्वर है। उसने आपको एक विविधता में बनाया। कुछ लोग तो सच में रौबिले होते हैं, और कुछ लोग असली कट्टर या सिद्धांतवादी होते हैं, जबकि दूसरे भले होते हैं, और कुछ उदार होते हैं। और आप बस उसके राज्य में विभिन्न प्रकार के लोग पाते हैं।

देखिए,

34

देखिए, आप पतरस पर दृष्टि डालें, और आप उसकी तुलना अन्द्रियास से करें। दे खिए, अन्द्रियास तो प्रार्थना का वह योद्धा था जो सारे समय अपने घुटनों पर ही रहता था। और प्रेरित पतरस तो उन ज़ोशीलों में से था जिन्होंने प्रचार व इसी प्रकार के दूसरे काम किये थे। और

पौलुस तो बहुत अधिक विद्वान के जैसा था—वह तो बहुत ज्यादा भविष्यद्वक्ता के जैसा था, अथवा वह कुछ ऐसा था और पीछे बैठा और.....

और देखिए, मूसा ने पुराने नियम की पहली चार किताबें लिखी थीं—मूसा तो वह था जिसने पुराना नियम लिखा था। इसका बाकी भाग तो व्यवस्था, और राजा, और भजन संहिता, और इत्यादि इत्यादि, तथा वह था जो भविष्यद्वक्ता (THE PROPHET) के बारे में ही लिखा गया था। परन्तु मूसा ने व्यवस्था लिखी थी; उसने बाइबिल की पहली चार पुस्तकेंः उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था और व्यवस्थाविवरण लिखी थी। और उसके बाद पौलुस ने नया नियम लिखा था। यह सच है।

मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना ने तो उन कामों को तथा इसी प्रकार की दूसरी बातों को लिखा था, जो घटित हुई थीं। लेकिन पौलुस ने ही व्यवस्था और अनुग्रह को अलग अलग किया, और उसने ही इसे इसके स्थान पर रखा। समझे? वह नये नियम का लेखक था। उसी ने हमें नये नियम का लिखित स्वरूप दिया, और उसी ने ही परमेश्वर के वचन को लिखित रूप में सही तरह से क्रमबद्ध किया।

अब, आप बहुत..रहने के बहुत से स्थान पर; कई प्रकार के स्थान पर ध्यान दें।

35

जैसे विभिन्न प्रकार के पर्वत हैं, जैसे विभिन्न प्रकार की सरिताएं, झरने, झीलें हैं—जब आप पहली बार यहाँ पर आते हैं, तो वे यहीं पर थे; क्योंकि तुम्हारे स्वर्गीय पिता की उदारता ने ही उन्हें यहाँ पर रखा था, क्योंकि कुछ लोगों को पर्वत अच्छे लगते हैं, कुछ लोगों को पानी अच्छा लगता है; कुछ लोगों को रेगिस्तान अच्छा लगता है। अतः आप देखते हैं, कि आपका आगमन....वह आपका स्वभाव और आप क्या होंगे, जानता था , इसीलिए उसने इसे इस प्रकार बनाया, कि आप इससे आनन्द मगन हो सकें। ओह, मैं सोचता हूँ, कि वह एक बड़ा ही अद्‌भुत पिता है, तभी तो उसने इसे ऐसा बनाया है। समझे? मैं प्रसन्न हूँ, कि उसने पर्वत बनायें, मुझे पर्वत अच्छे लगते हैं। मैं और... मुझे..मुझे..मुझे वे प्रिय लगते हैं। जबकि दूसरे लोग कहते हैं, "ओह, मैं इन सब को सहन नहीं कर सकता हूँ; उसने अवश्य ही अपने मसाले का बॉक्स वहाँ पर खाली कर दिया होगा।" ठीक हैं, उसने इसे खाली कर दिया था, ताकि मैं इसका आनन्द ले सकें। समझे आप?

| ऐसे ही इसके बाद आप कहते हैं, "मुझे तो समतल स्थान अच्छे लगते हैं जहाँ मैं लम्बे लम्बे रास्ते देख सकता हूँ।" ठीक है, ये दोनों ही अलग अलग स्वभाव हैं, परन्तु फिर भी हम दोनों मसीही हैं। परन्तु स्वर्गीय पिता जानता था, कि आप यहाँ पर होंगे और इससे पहले कि आप यहाँ पर होते, उसने सारी वस्तुएं आपके लिए तैयार कीं। आमीन! आप...यहाँ पर पहले आगमन पर ही....उसने इसे आपके लिए तैयार किया, कि जब आप यहाँ आयें, तो यह तैयार पायी जाये। क्या उसके बारे में सोचना, जो उसने किया है, एक शानदार बात नहीं है?

36

अब देखिएगा, परन्तु अब यह याद रखें, कि ये तो प्रतिछाया के रूप में ही सामयिक (अल्पकालिक) उपहार हैं। अब, हम जानते हैं, कि जब मूसा जंगल में मन्दिर बना रहा था, अथवा उसे तैयार कर रहा था, तो उसने कहा था, कि उसने सब कुछ ठीक वैसा ही बनाया है, जैसा उसने स्वर्ग में देखा था। समझे? अतः पृथ्वी की वस्तुएं तो केवल अनन्त वस्तुओं का ही प्रतिचित्रण करती हैं। और यदि —यह पृथ्वी जिस पर आज हम रहते हैं, इतनी महान है, कि हम

इससे प्रेम करते हैं और इस पर रहना और वायु का सांस भरना पसंद करते हैं, और पुष्प तथा दूसरी चीजें देखते हैं, यदि यह-यह यहाँ पर केवल प्रतिचित्रण ही है, यह मरनहार तो केवल उसका ही प्रतिचित्रण है। जो अनन्त है। जब आप किसी वृक्ष को जिन्दा रहने के लिए ज़द्दोज़द करते हुए, ज़ोर लगाकर बढ़ते हुए, पुरज़ोर यत्न करते हुए देखते हैं, तो इसका यही तात्पर्य है, कि कहीं पर कोई एक ऐसा वृक्ष है जिसको ऐसा नहीं करना होता है। जब आप यहाँ पर मनुष्य को देखते हैं जो जीने के लिए संघर्ष कर रहा होता है, कोई अस्पताल में होता है, या कोई रोगी वाली शय्या पर होता है, या कोई दुर्घटनाग्रस्त होता है; और संघर्ष कर रहा होता है, और मौत उनके कंठ में खरखरा रही होती है, और वे जीवन के लिए ज़ोर लगा रहे होते हैं, और दुहाई दे रहे होते हैं, रो रहे होते है-चीख-पुकार कर रहे होते हैं, तो इसका क्या अर्थ होता है? —कि कहीं कोई एक ऐसा स्थान है, कहीं एक ऐसी देह है। जो इसके लिए संघर्ष नहीं करती है, और चीख-पुकार, चीत्कार नहीं करती है। समझे? वह तो बस ऐसा करती ही नहीं है।

अब, ये तो हमारे लिए केवल अल्पकालिक उपहार ही हैं-ये वस्तुएं तो केवल इसे ही दर्शा रही हैं, कि कहीं पर एक ऐसी है जो अनन्त है। यीशु इसी को तैयार करने के लिए गया हुआ है-यही वह अनन्त है जिसे वह हमारे लिए तैयार करने के लिए गया हुआ है। अब, ये केवल उसे ही दर्शती हैं, कि इससे भी ज्यादा श्रेष्ठ ऐसा ही कोई स्थान है, क्योंकि ये उसी प्रकार की चीजें हैं।

37

अब स्मरण रखिएगा, कि बाइबिल कहती है, "यदि हमारा यह पृथ्वी पर का डेरा सरीखा नाश हो जाएगा (गिर जाएगा), तो हमारे पास एक ऐसा घर है जो पहले से ही हमारी बाट जोह रहा है।" ठीक जैसे कि एक नन्हा शिशु होता है; वह अपनी माँ के अंदर छोटी छोटी मांसपेशियों के रूप में ही होता है जो रेंगती और चक्कर लगाती हुई होती हैं...परन्तु केवल...समझे? और आप ध्यान दें, कि आप एक स्त्री को उदाहरण स्वरूप देख सकते हैं, जो कभी अत्याधिक भ्रष्ट थी, परन्तु जब वह माँ बन जाती है-इससे पहले कि वह शिशु पैदा हो, उसमें- उस स्त्री में बहुत थोड़े समय के लिए एक उदारता होती है। आप उसके पास जायें। वहाँ हमेशा ही कोई चीज होती है। वह और भी ज्यादा मधुर हो जाती है। क्यों? क्योंकि वहाँ पर एक छोटे से फरिश्ते की आत्मा होती है, जो कि उस स्वाभाविक देह को ग्रहण करने की प्रतीक्षा कर रही होती है। ज्यों ही वह जन्म लेता है, त्यों ही जीवन का श्वास उसके अंदर आ जाता है, और परमेश्वर ही इसे उसके अंदर फेंकता है, और वह एक जीवता प्राणी बन जाता है। अब देखिएगा, ठीक जैसे ही यह शिशु उत्पन्न होता है, वैसे ही इसके बाद इसे ग्रहण करने के लिए एक आत्मिक देह होती है।और अब जब यह देह पृथ्वी पर आ गिरती है, जैसे एक शिशु का जन्म होता है, वैसे ही वहाँ पर एक अमरनहार देह उस आत्मा को फिर से अपने में ग्रहण करने के लिए बाट जोह रही होती है। ओह, क्या ही बढ़िया बात है! अब हम हैं....हम मसीह यीशु में हैं(आमीन!) मसीह में बच्चे हैं, परमेश्वर की सन्तान हैं; और इस बात की बाट जोह रहे हैं, कि प्रभु यीशु के आगमन पर हमारा पूरा छुटकारा हो...ताकि वह हमें स्वयं अपने लिए ऊपर ग्रहण करे...जब यह देह....जब यह मरनहार अमरनहारता को पहन लेगी।

38

उसकी समानता में पाये जायें...वे सारे काम जो उसने किये वे उन बातों को ही प्रकट करते हैं जो आगे आने वाली हैं। ठीक जैसे कि वह आपको यहाँ पर एक देह देता है...ठीक जैसे कि यह देह जो उसने आपको दी, कि आप उसमें रहें, केवल इस बात का प्रकटीकरण करती है, कि एक ऐसी है जो इससे भी महान है जो अभी आनी बाकी है। समझे? यदि हमारे पास है, या हम पृथ्वी वाली शक्ल-सूरत में जन्मे हैं, तो हमारे पास उस स्वर्गीय वाली शक्ल-सूरत भी होगी

जिसमें कोई बुराइयाँ नहीं पायी जाती हैं...जो कि आगे आने वाली है। अब इस वाली में तो बुराई, बीमरी, मृत्यु, दुखसन्ताप पाया जाता है।

अधिक समय नहीं हुआ है, कि जब मैंने यहाँ पर(परमेश्वर के वचन के रूपान्तरण पर प्रचार) करते हुए अभिव्यक्त किया था, कि कैसे वह—कि यह देह जिसके अंदर बुराई पायी जाती हैं, और ये सारी आधुनिक सभ्यता जिसमें हम रहते हैं, शैतान की हैं। क्या आप इसका विश्वास नहीं करते हैं? बाइबिल ऐसा ही बताती है। यह संसार, हर एक सरकार..(हम इसका विश्वास तो नहीं करना चाहते हैं).. परन्तु बाइबिल स्पष्ट रूप से यह कहती है, कि पृथ्वी की हर एक सरकार, पृथ्वी के हर एक राज्य शैतान के हाथों में हैं, और शैतान के द्वारा ही शासित होते हैं। शैतान यीशु को ऊँचे पर ले गया था, और उसने उसे संसार के उन सब राज्यों को जो थे, जो होंगे, और जो होने भी हैं, दिखाया, शैतान ने यह दावा किया था, कि वे उसके हैं। और यीशु ने उससे कदापि तर्कवितर्क नहीं किया था, क्योंकि वह इस संसार का ईश्वर है। समझे? और उसने कहा था, "यदि तू मुझे दंड़वत् करे, और मेरी आराधना करे, तो मैं तुझे ये दे दूंगा।" देखिए, वह यीशु को बिना बलिदान के ही देने की चेष्टा कर रहा था। समझे? यह तो एक सौदेबाज़ी थी जो वह उसके साथ कर रहा था। पर संसार ने पाप किया था; और पाप का दंड़ मृत्यु था, इसलिए उसे तो मरना ही था। यही कारण था, कि परमेश्वर देह में प्रकट हुआ था, ताकि उस दाम को चुकाने के लिए अपने ऊपर मृत्यु ले सके। अब कुछ भी ऐसा नहीं है जिसका हमें भुगतान करना पड़े; यह कान में किया जाने वाला गुलामी वाला निशान नहीं रहा है। इसे तो हमारे लिए पूरी तरह से बेमोल चुका दिया गया है। सारे ऋणों को चुका दिया गया है। अब यह उसकी है। और हम उसके राज्य के प्रतिनिधि हैं, जो आज रात्रि यीशु मसीह के नाम में, जो कि हमारा राजा है, यहाँ पर एक साथ एकत्र हुए हैं और स्वर्गीय स्थानों में बैठे हुए हैं।

39

अब, इस संसार में जिसमें हम रहते हैं, इसकी शिक्षा....मैं आप पर यह साबित करना चाहता हूँ, कि शिक्षा, विज्ञान, सभ्यता, और ये सारी वस्तुएं जो आज हमें इतनी आनन्ददायक लगती है, शैतान की हैं और नाश हो जायेंगी। आप कहते हैं, भाई ब्रन्हम, क्या सभ्यता भी?" जी हाँ, श्रीमान! यह सभ्यता शैतान के ज़रिये ही आयी है। उत्पत्ति का चौथा अध्याय इसे सिद्ध करता है। कैन की संतान ने ही सभ्यता का आरम्भ किया था(समझे?)..उसी ने ही नगरों का निर्माण करना, और वाद्य यंत्रों और इसी प्रकार की वस्तुओं का निर्माण करना आरम्भ किया था। और सभ्यता ज्ञान के द्वारा ही आयी। यह ज्ञान ही था जिसे शैतान ने अदन की वाटिका में हव्वा को बेचा था, कि उससे परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लघंन कराये। अतः उस जगत में जिसमें हम जा रहे हैं, एक सभ्यता होगी, लेकिन वह इस तरह की सभ्यता नहीं होगी। क्योंकि इस सभ्यता में तो हम में बीमारियाँ, दुख, अभिलाषा, मृत्यु होती है; इस सभ्यता में तो सब कुछ गलत ही है। परन्तु उस सभ्यता में ऐसा कुछ नहीं होगा। वहाँ हमें विज्ञान की कोई आवश्यकता नहीं होगी। कुछ भी हो विज्ञान तो वास्तविक वस्तु का बिगड़ा हुआ रूप ही है। समझे? आप अणु का विखंड़न परमाणुओं में करते हैं, और अमुक-अमुक काम करते हैं, कि वह आपका विध्वंस कर डाले। आप बंदूक का विस्फोटक मसाला लेते हैं और उसे ज़ोर से चलाते हैं, और किसी को जान से मार डालते हैं। आप कार लेते हैं, और पृथ्वी में से गैसोलीन लेते हैं, और पृथ्वी में से तत्व बाहर निकालते हैं, कि तन्तुओं को ढीला कर दें, ताकि इसका नाश हो जाये; और आप सड़क पर नब्बे मील प्रति घन्टे की रफ्तार से मोटरगाड़ी चलाकर जाते हैं, और किसी को जान से मार डालते हैं। समझे? ओह, इतनी ज्यादा अधीरता, दबाव और जल्दबाज़ी है, कि हमें धक्कामुक्की करनी होती है, और ले लेना होता है....ओह, देखिए, यह सब शैतान की ही है। परमेश्वर के राज्य में स्वचालित वाहन, वायुयान या कोई भी वैज्ञानिक उपलब्धि नहीं होगी। जी नहीं! वहाँ

बिलकुल भी कोई शिक्षा नहीं होगी। वहाँ पर तो एक ही शिक्षा होगी, जो कि इस वाली से कहीं सर्वश्रेष्ठ होगी। समझे? शिक्षा, सभ्यता, और इसी प्रकार की सारी बातें शैतान की ओर से ही आती हैं।

अब, यदि आप कहते हैं, "भाई ब्रन्हम, तो फिर आप क्यों पढ़ते हैं?"

40

देखिए, यह तो बिलकुल ऐसा है, कि हम अब कपड़े क्यों पहने हैं? उस सभ्यता में जो आनी थी- यह वह पहली बात थी, कि उन्हें वस्त्रों की कोई आवश्यकता नहीं थी; वे तो उघड़े हुए ही थे। उनके पास वस्त्र पहनने का कोई कारण नहीं था, क्योंकि वे नहीं जानते थे, कि वे नंगे थे। अब आप—आप इसमें यह पाते हैं, फिर जब कि हम यह जान जाते हैं, कि हम नंगे हैं, यहाँ पर पाप व्याप्त है, तो फिर हमें कपड़े पहनने होते हैं। परन्तु आरम्भ में ऐसा नहीं था; तब कोई पाप नहीं था। समझे?

अब, बिलकुल ठीक ऐसा ही सभ्यता के मामले में है। कुल मिलाकर हम पढ़ते हैं, हम लिखते हैं, हम यह करते हैं; परन्तु कभी भी आप इसके अनुरूप न बन जायें, आप उसे कभी भी अपना ईश्वर न बनायें, क्योंकि वह तो साम्यवाद का ईश्वर है। समझे? यह यीशु मसीह की नहीं है।

41

यीशु मसीह तो विश्वास से ही है, ना कि उससे है, कि आप वैज्ञानिक तौर पर क्या क्या साबित कर सकते हैं, वरन यह तो इससे है जो कि आप विश्वास करते हैं।

मैं आज रात्रि इस भवन में वैज्ञानिक तौर पर आप पर यह साबित नहीं कर सकता हूँ, कि परमेश्वर यहाँ पर है; परन्तु तौभी मैं जानता हूँ, कि वह यहाँ पर है; परन्तु मैं अपने विश्वास से ही इसे साबित करता हूँ।। अब्राहम वैज्ञानिक तौर पर आप पर यह साबित नहीं कर सकता था, कि उसे उस स्त्री से जो कि लगभग सौ वर्षीय थी, बालक प्राप्त होने जा रहा था-परन्तु उसके विश्वास ने ही इसकी पुष्टि की थी। समझे? उसे किसी वैज्ञानिक प्रमाण की कोई आवश्यकता नहीं थी। क्यों...क्यों, चिकित्सक ने यह कहा होगा, "वह सनकी आदमी यहाँ बाहर यह कहता फिर रहा है, कि उसके उस स्त्री से एक..एक बालक होने जा रहा है; जबकि वह खुद सौ वर्षीय है, और वह स्त्री नब्बे वर्षीय है। लेकिन आप देखते हैं, कि परमेश्वर ने ऐसा ही कहा था, अतः इसके लिए विज्ञान की नहीं, वरन विश्वास की आवश्यकता होती है, कि परमेश्वर के वचन की प्रतीति करे। इसके लिए विज्ञान की आवश्यकता नहीं थी।

42

अतः हमारे विद्यालय तथा इसी प्रकार की चीजें तो एक विध्वंसक हैं। यही है......परमेश्वर ने कभी यह नहीं कहा था, कि "जाओ, और विद्यालय बनाओ"; अथवा यहाँ तक कि उसने सैमनरी अर्थात् बाइबिल स्कूल बनाने के लिए भी नहीं कहा था। क्या आप यह जानते थे? उसने कहा था, "वचन का प्रचार करो।" यह पूर्णतः सच है। हमारी शिक्षा प्रणाली हमें परमेश्वर से बहुत ज्यादा दूर ले गई है। (यह सच है)...यही हमें परमेश्वर से उतनी दूर ले गई है जितना कि मैं किसी दूसरी वस्तु के बारे में जानता हूँ। शिक्षण संस्थानों, चिकित्सालयों का तथा इसी प्रकार के स्थलों का निर्माण न करें, वे तो संसार और इसी प्रकार के समूह के लिए हैं। परन्तु...मेरे पास उनके विरोध में कोई बात नहीं है। वे तो अपनी ही भूमिका अदा करते हैं; परन्तु यह फिर भी उस में नहीं है। हमने कभी एक अस्पताल का अति सुंदर निर्माण किया और उसमें उस सबसे

श्रेष्ठ औषधि का उपयोग किया जो हमारे पास थी, लेकिन फिर भी हर रोज़ हजारों लोग मरते हैं। परन्तु ओह; परमेश्वर के राज्य में कोई मृत्यु नहीं है, वहाँ कोई दुख नहीं है! आमीन! वहाँ पर संसार की इन वस्तुओं की कोई आवश्यकता नहीं है! परन्तु हम तो इस चीज से पार होकर परमेश्वर की वास्तविकता में प्रवेश कर चुके हैं। जहाँ हम विज्ञान के द्वारा खोज करने का यत्न करने के लिए अत्याधिक संघर्ष करते हैं, और हम जितने ज्यादा वैज्ञानिक होते चले जाते हैं, हम अपने ऊपर उतनी ही ज्यादा मृत्यु लेकर आते चले जाते हैं। हम तो बस एक हारा हुआ युद्ध ही लड़ रहे हैं, अतः इसे मुक्त छोड़ दें; और आप आज रात्रि विश्वास के द्वारा परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह की प्रतीति करें, और उसे ग्रहण करें। वही एक है!

विज्ञान आपके लिए क्या तैयार कर रही है? और ज्यादा मृत्यु! यह सही बात है। स्पूटनिक तथा हर एक वह चीज जो ऊपर जाती है, और इसी प्रकार की वस्तुएं तो केवल वे हैं जो पृथ्वी भर पर मृत्यु और सभी तरह की विपत्तियाँ फैला रही हैं। आप उन पर दृष्टि न लगायें, आप अपना सिर इससे कहीं ऊँचे की ओर उठायें, अपना सिर स्वर्ग की ओर उठायें। आगे की ओर देखें.....आज रात्रि यीशु परमेश्वर की दाहिनी ओर विराजमान है, और हमारे इस अंगीकार की मध्यस्थता करने के लिए युगानुयुग जीवता है, कि हम विश्वास करते हैं, कि उसका वचन सच्चा है।।

43

अब, हम यह देखते हैं, कि इस जीवन में तो सभी प्रकार की बुराइयाँ पायी जाती हैं; यही कारण है, कि उस जीवन में जो आनेवाला है, ये सब नहीं होंगी। इस वाले जीवन में तो बुरी बुरी लालसा, बीमारी, मृत्यु होती है, क्योंकि यह जीवन क्या है? यह वाला वह घर नहीं है जिसे वह तैयार करने के लिए गया हुआ है। यह वाला जीवन तो "बीमारियों का घर" है। कितने लोग जानते हैं, कि "बीमारियों का घर क्या होता है? निश्चय ही, आप इसे जानते हैं। खैर, यही है वह जिसमें आप जीवन व्यतीत कर रहे हैं। "बीमारियों का घर" वह स्थान होता है जहाँ वे सारे बीमार लोगों को रखते हैं। खैर यही है वह जो पाप ने हमारे लिए किया है, उसने हमें सांसारिक बीमारियों के घर में डाल दिया है। हम...आप...वे "बीमारियों के घर में किसी और को अंदर आने नहीं देते हैं, क्योंकि वहाँ पर चारों ओर सभी तरह के हानिकारक कीटाणु उड़ते रहते हैं, और..और लोग इन कीटाणओं को ग्रहण कर लेंगे और खुद अपने को बीमार कर डालेंगे। और पाप हमें शैतान के "बीमारियों के घर में लेकर आया।

44

ओह, लेकिन एक और घर है जो मेरे स्वर्गीय पिता का घर कहलाता है। मैं जाता हूँ, और तुम्हारे लिए एक जगह तैयार करता हूँ। मैं तुम्हें बीमारियों के इस घर से बाहर निकालता हूँ, और तुम्हें अपने पिता के घर में ले जाता हूँ।" आमीन! आप ऐसी ही स्थिति में हैं। उसने मुझे इस पुराने दुनियावी 'बीमारियों के घर से बाहर निकाला। वह एक ऐसा स्थान तैयार करने के लिए—एक सिद्ध स्थान तैयार करने के लिए जा चुका है, जहाँ न कोई बुराई, न कोई बीमारी, न कोई बुढ़ापा, न कोई मृत्यु विद्यमान है। यह एक सिद्ध स्थान है जो आपको उस सिद्धता की ओर बुला रहा है; आपको उस जगह में होने के लिए सिद्ध बनना है। बाइबिल ऐसा ही बताती है। यीशु ने कहा था, तुम वैसे ही सिद्ध बनो, जैसे तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।" और वह एक सिद्ध राज्य है, अतः यह आवश्यक है, कि सिद्ध लोग ही उस राज्य में आयें, क्योंकि आपको खड़ा होना है और परमेश्वर के सिद्ध पुत्र से विवाह करना है; आपको एक सिद्ध दुल्हन होना चाहिए। अतः आप यह और किसी दूसरे के द्वारा कैसे कर सकते हैं, वरन आप तो ऐसा परमेश्वर के सिद्ध वचन के द्वारा ही कर सकते हैं, जो कि शुद्ध करने वाला वह जल है (पृथ्ककरण करने वाला वह जल है), जो

हमें हमारे पापों से शुद्ध करता है। आमीन! यह सही बात है! वह यीशु मसीह का लोहू है। आप ज़रा इसके बारे में सोचें! बूंद बूंद करके टपकनेवाला रक्तरंजित वचन! आमीन! लोहू—परमेश्वर का वचन लोहू बहा रहा है, ताकि दुल्हन को शुद्ध करे। आमीन! जी हाँ, श्रीमान! वह सिद्ध, कुंवारी, व्यभिचार रहित खडी होती है; पहली बात तो यह है, कि उसने कभी पाप नहीं किया था। आमीन! उसे तो इसमें फंसाया ही गया था। समझे? वहाँ पिता का घर है जिसे वह तैयार करने के लिए गया हुआ है।

45

यह वाला तो यौन प्रक्रिया और गिरावट के द्वारा आता है; और इसे तो अवश्य ही गिरावट के साथ ही गिर जाना चाहिए। इससे कोई मतलब नहीं है, कि चाहे आप पुरानी देह पर कितना भी पैबंद क्यों न लगाते हों, कुछ भी हो, यह तो गिर ही जायेगी। यह तो मर-मिटेगी; क्योंकि यह ना ाशमान है; क्योंकि परमेश्वर ने ही ऐसा कहा था। यह तो खत्म होनी है! परमेश्वर ही इसका नाश कर देगा। उसने ऐसा ही कहा था। फिर से सारी चीजों को नया बनाया जाएगा। क्या आप इसका विश्वास करते हैं? आरम्भ में जब पृथ्वी का जन्म हुआ था, तो परमेश्वर ने सबसे पहले पृथ्वी पर से जल हटाया था-जैसे उसने माँ के गर्भ से जल हटाया था-ऐसे पृथ्वी का जन्म हुआ था। जी हाँ! और जब परमेश्वर ने लोगों को पृथ्वी के ऊपर रखा, तो लोग पृथ्वी के ऊपर रहने लगे। और तत्पश्चात् वे पाप करने लगे। और इसका नूह के दिनों में जल में डुबाये जाने के द्वारा बपतिस्मा हुआ।

इसके बाद इस पर सृष्टिकर्ता का लोहू बहने के द्वारा, इसका पवित्रीकरण हुआ। अब, ठीक इसी रीति से आप आते हैं। परमेश्वर पर विश्वास करने के द्वारा आप धर्मी ठहरते हैं। आपका मन फिराव के लिए—वरन पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा हुआ। आपने परमेश्वर के सम्मुख अपने पापों का अंगीकार किया, और उसने आपको आपके पापों से क्षमा किया। और आपने यह दिखाने के लिए बपतिस्मा लिया, कि आप को क्षमा मिल चुकी है, और आप लोगों के सम्मुख स्वीकार कर रहे होते हैं, और जगत को यह दिखा रहे होते हैं, कि आप यह विश्वास करते हैं, कि यीशु मसीह आपके लिए मरा; और उसने आपका स्थान लिया था, और अब आप उसके स्थान पर खड़े हैं। वह "तुम" बन गया, ताकि तुम "वह" बन सको। इसके बाद परमेश्वर की पवित्र करने वाली सामर्थ आपके जीवन में से हर एक बुरी आदतें बाहर निकाल देती है। आप धूम्रपान करना, शराब पीना, और आप जो उन कामों को करते थे, जो ठीक नहीं थे; आप झूठ बोला करते थे, और इसी तरह के सारे काम किया करते थे। फिर यीशु मसीह के लोहू की पवित्र करनेवाली सामर्थ आपके जीवन के अंदर आती है, और वह आपके जीवन में से उन सब बुराइयों को बाहर निकाल देती है। यदि ऐसा होता है, कि आप कहते हैं —-यदि आप से कोई गलती हो जाती है, तो आप तुरन्त ही यह कहते हैं, "एक मिनट रूकिए; मुझे क्षमा कीजिए; मेरा कहने का वह अभिप्राय नहीं था।" समझे? शैतान ने तो वहाँ पर फंदा बिछाया हुआ है; परन्तु यदि आप एक सच्चे मसीही हैं, तो आपके पास वापस आने के लिए अनुग्रह होता है; और आप कहते हैं, "मैं गलत था। जी हाँ, इसी कारण..

46

अब देखिए, अब, आप जो अगली चीज पाते हैं, वह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और आग से बपतिस्मा पाया जाना होता है। अब, जब सहस्राब्दि खत्म हो जाती है, तो परमेश्वर इस पृथ्वी का आग से बपतिस्मा करेगा। वह सारी चीजों को चकनाचूर कर देगी। आकाश और पृथ्वी जल जायेंगे; पतरस ने ऐसा ही कहा था। और इनका आग से बपतिस्मा होगा; सब कुछ पुनः नवीन होगा, और तब एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी होगी। यह तब होता है—यह वह जगह

होगी जहाँ धार्मिकता वास करेगी। यही है वह जहाँ हम...हम मरनहार जीव से-समयबन्धित जीव से अनन्त जीव बन जाते हैं, जब परमेश्वर का वचन हमारे प्राणों में प्रज्ज्वलित होता है, और हम परमेश्वर के गुणों से भरे परमेश्वर के पुत्र व पुत्रियाँ बन जाते हैं—परमेश्वर का जीन हमारे अंदर होता है, ताकि हम स्वर्गीय पिता परमेश्वर के वे पुत्र हो जायें, जो यह पुकारते रहते हैं, "हे अब्बा, हे पिता, हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर! मेरे पिता के घर

में."

47

अब, इस पुराने जगत को तो मर-मिट जाना चाहिए, क्योंकि यह तो यौन प्रक्रिया के द्वारा ही आया है, और यह तो आरम्भ में ही अवाज्ञाकारिता के द्वारा आया है। और हम यहाँ पर यौन प्रक्रिया के द्वारा, गिरावट के द्वारा उत्पन्न हुए थे, और इसे तो ठीक उसी रीति से ही वापस पतन की ओर लौट जाना चाहिए। परन्तु अब जो वह

आपके लिए एक जगत तैयार कर रहा है, उसका पतन नहीं हो सकता है, क्योंकि वह उसे ऐसा ही बना रहा है....?...क्या हो यदि हमें केवल इसी प्रकार के शरीर में ही रहना पड़े? क्या आप इस बात से खुश नहीं है, कि मृत्यु जैसी एक चीज है? अब, क्या यह अचरज की बात नहीं है? परन्तु अब; मैं इसे उदाहरण के लिए कहता हूँ, कि कुछ वर्ष पहले मैं एक युवा लड़का सा ही था, और अब मैं अधेड़ व्यक्ति हूँ। मेरे एक मित्र श्रीमान डाऊच यहाँ पर बैठे हुए हैं, और वे कुछ दिन पहले ही तिरान्ड़े साल के थे। अब आप उन्हें देखें। अब से चालीस या पैंतालीस साल बाद मैं उनके जैसा होऊँगा। अब, उन पर और चालीस वर्ष डाल दें। आप कहाँ जायेंगे? केवल....

48

मैं आनन्दित हूँ, कि कहीं कोई एक ऐसी चीज है जो हमें बीमारियों के इस घर से बाहर निकालती है। वहाँ एक खुला द्वार है और वह मृत्यु कहलाता है। यीशु ही उस द्वार पर खड़ा हुआ है। आमीन! वही नदी के पार मेरा मार्ग दर्शन करेगा। वही मुझे उस द्वार में से होकर लेकर जाएगा।

एक बहुत बड़ा द्वार स्थित हुआ दृष्टिगोचर होता है जो मृत्यु कहलाता है। और हर बार आपका हृदय धड़कता है और आप हर एक एक धड़कन पर उसके और भी समीप आते चले जाते हैं। और किसी दिन मुझे उस द्वार के समीप आना ही चाहिए। आपको वहाँ आना ही चाहिए। परन्तु जब मैं वहाँ आता हूँ, तो मैं एक डरपोक नहीं होना चाहता हूँ; मैं नहीं चाहता हूँ, कि रोऊँ-चिल्लाऊँ, और वहाँ से पीछे भागूं। मैं तो उस द्वार पर आना चाहता हूँ, और मैं स्वयं अपनी धार्मिकता का वस्त्र नहीं, अपितु उसी की धार्मिकता का ही वस्त्र ओढ़े हुए होऊँ। इसी के द्वारा मैं उसे उसकी पुनरूत्थान की सामर्थ में जानता हूँ, कि जब वह मुझे बुलाता है, तो मैं मरे हुओं में से बाहर निकल आऊँगा, मैं बीमारियों के इस घर में से बाहर निकल आऊँगा, कि मैं उसके साथ रहूँ। चाहे जहाँ कहीं यह देह गिरे, और चाहे यह जहाँ कहीं पड़ी रहे; यह चाहे जो कुछ भी हो, मैं किसी दिन बाहर निकल आऊँगा, क्योंकि उसने मुझ से इसका वायदा किया है; और हम इसका विश्वास करते हैं। जी हाँ, श्रीमान! वह एक ऐसा स्थान बना रहा है। जिसका पतन नहीं हो सकता है।

49

ध्यान दीजिए, कि आज पृथ्वी पर माँ कैसे आशा कर रही होती है, माँ की देह कैसे कुछ निश्चित वस्तुओं की लालसा कर रही होती है। मैं सोचता हूँ मैं सभी वयस्कों से यह आशा करता हूँ, कि जो मैं कह रहा हूँ आप उसे समझ रहे हैं। यदि किसी शिशु के जन्म में माँ की देह में किसी चीज की कमी पायी जाती है, तो वह उन निश्चित चीजों की लालसा कर रही होती है। देखिएगा, कि कैसे पिता...मुझे स्मरण है, कि मैं एक बहुत ही निर्धन परिवार में पला-बढ़ा हूँ और जब हम बच्चे थे, तो हमारे पास मुश्किल से ही कुछ खाने के लिए होता था। आप में से बहुतेरों ने ठीक ऐसी ही स्थिति को सहा है।

अतः कैसे जब....इससे पहले कि शिशु उत्पन्न हो, माँ किसी चीज की लालसा कर रही होती है, और पिता उसको वह सब कुछ देने के लिए पुरज़ोर यत्न कर रहा होता है। देखिए, यह उसका शरीर है—यह उसका शरीर है जो...उसके शरीर को कैल्शियम, विटामिन्स, तथा इसी प्रकार के दूसरे अवयवों की आवश्यकता होती है, जिनकी आपका निर्माण करने के लिए आवश्यकता होती है। समझे? और वह उन वस्तुओं के लिए—आनेवाले शिशु के भोजन के लिए लालसा कर रही होती है। और माता-पिता कैसे उसे उन वस्तुओं को देने का यत्न कर रहे होते हैं, ताकि जो शिशु उत्पन्न हो, वह यथासम्भव पूरी तरह से सुचारु रूप से और प्रसन्नतावूर्वक उत्पन्न हो सके। देखिए, आपके माता-पिता इसे कैसे करेंगे। जब किसी चीज की जरूरत होती है, तो माँ उसके बारे में बताती है। समझे? उसका शारीरिक तन्त्र इसी तरह का बना होता है। आनेवाले शिशु को किस चीज की जरूरत है, आप उसे इसी तरह से समझते हैं कि माँ उस चीज की लालसा करने लगती है।

50

अब, ज़रा एक मिनट के लिए रूकते हैं! क्यों हम में बेदारियाँ होती हैं? क्यों हम आपस में एक साथ इकट्ठा होते हैं? क्यों मैं लोगों को हमेशा ही डाँटता-फटकारता रहता हूँ? क्यों मैं तुम पिन्तेकोस्तल स्त्रियों से यह कहता रहता हूँ, कि तुम रंग पोतना, और श्रृंगार करना, और छोटे छोटे कटे बाल रखना और इसी प्रकार के अनर्थ के कार्य कलाप करना बंद कर दो ? क्यों मैं ऐसा कह रहा हँ? क्योंकि पुराने चलन वाले प्राचीन पिन्तेकोस्तल ऐसा नहीं किया करते थे। सच्ची बाइबिल का उस तरह के कामों को करने का तौर-तरीका नहीं है। आप उन छोटी छोटी नीकरों को और उन पहरावों को पहन रही हैं जो परूषों के हैं; क्या आप नहीं जानती हैं, कि यह परमेश्वर की दृष्टि में घृणित कार्य है? मगर हम ऐसा करने की अनुमति दे देते हैं! क्यों पवित्र आत्मा इसके विरूद्ध ऊँचे स्वर से चिल्ला रहा है! क्योंकि वह जानता है, कि वहाँ किसी चीज की कमी है। हमें तो यीशु मसीह के पूर्ण डील डौल में होना चाहिए। हमें तो परमेश्वर के पुत्र व पुत्रियाँ होना चाहिए। हमें तो परमेश्वर की सन्तानों के जैसा ही आचार-व्यवहार करना चाहिए।

51

बहुत समय पहले एक लधु गाथा बतायी गयी थी। मैंने ध्यान दिया था, कि एक अश्वेत भाई पीछे बैठा हुआ है। यहीं पर दक्षिण में दासों को बेचा जाता था— दास मुक्ति घोषणा होने से पहले जब दास प्रथा थी, तो दासों को बेचा जाता था। और लोग वहाँ जाकर गुलामों को वैसे ही खरीदते थे जैसे वे कार डीलर से कार खरीदते हैं। उनके पास बिक्री का इश्तिहार होता था, और वे उन मनुष्यों को वैसे ही बेचते थे जैसे वे लोग कार बेचते हैं। आपको उनक ऊपर बिक्री का इश्तिहार लगा मिलता था।

52

एक बार एक खरदार आर्थात् एक दलाल आया। और उसकी यहाँ आसपास खेती-बाड़ी होने जा रही थी, और वह दास खरीदने वाला था। और वह किसी निश्चित बड़े खेत में आया जहाँ पर बहुत से दास थे। और वह यह देखना चाहता था, कि उनके पास कितने दास हैं। और वहाँ बाहर वे सारे के सारे काम कर रहे थे। और वे उदासमायूस थे, वे अपने घर से दूर थे। वे वहाँ पर अफ्रीका से थे। उन्हें वहाँ से यहाँ पर लाया गया था। बूर (डच वंशी दक्षिणी अफ्रिकी किसान)...ही उन्हें वहाँ से लेकर आये थे और उन्हें गुलाम होने के लिए बेच दिया था। और इसलिए वे दुखी थे। वे जानते थे, कि वे कभी भी घर वापस नहीं जायेंगे। उन्हें तो इसी देश में जीना और मरना था। और वे थे.....कई बार तो वे कोड़े उठाते और उन्हें कोड़े मारते । वे अपने स्वामी की सम्पत्ति थे, और वह उनके साथ जो चाहे वह करता था। और वह बस...यदि वह उसे मारना चाहे, तो वह उसे मार देता था, और यदि वह...यह चाहे जो कुछ भी था वह वो ही कर देता था। यही दास प्रथा थी। जैसे इस्राएल तथा दूसरे देश गुलामी में लाये गये थे।

और उन्हें उन गरीब गुलामों को लेना होता था....वे दास तो सिर्फ सेवा ही करते थे। आप जानते हैं, कि वे सारे समय रोते ही रहते थे और दुखी रहते थे।

53

पर उन्होंने उन दासों में से एक दास पर—एक युवा लड़के पर ध्यान दिया था, उसका सीना बाहर को निकला हुआ था, और उसका सिर इस तरह से ऊपर को था। उन्हें उसे कभी भी कोड़े नहीं मारने पड़ते थे। उन्हें उसे कभी भी यह नहीं बताना पड़ता था, कि उसे क्या करना है। इसलिए उस दलाल ने कहा, "मैं इस दास को खरीदना चाहता हूँ।"

उसने कहा, "यह बिकाऊ नहीं है।"

दलाल ने कहा, "मैं तो इसे ही खरीदना चाहूँगा।"

उसने कहा, "नहीं, यह बिकाऊ नहीं है।"

दलाल ने कहा, "क्या यह बाकी दासों का बॉस है?"

उसने कहा, "नहीं, यह बॉस नहीं है; यह तो दास ही है।"

वह बोला, "अच्छा, शायद, तुम उसे उन बाकियों से अलग किस्म का भोजन देते हो ?"

उसने कहा, "जी नहीं, वे सब तो एक साथ ही वहाँ बाहर रसोईघर में भोजन खाते हैं।"

वह बोला, "ऐसा क्या है, जो यह लड़का उन दूसरों से अलग है?"

उसने कहा, "इसके बार में एक बात है। कुछ समय पहले तक तो मैं भी हैरानी किया करता था। परन्तु यह लड़का अफ्रिका का एक परदेशी है—परन्तु अफ्रिका में इसका पिता एक जन-जाति का राजा है। और हालांकि यह अपने घर से दूर एक परदेशी है, तौभी वह ऐसे आचार-व्यचहार करता है, मानो एक राजा का बेटा हो। वह जानता है, कि इस देश के पार उसका पिता है जो एक जन-जाति का राजा है। और अब, वह स्वयं ही अपना कामकाज करता है, क्योंकि वह जानता है, कि वह एक राजा का बेटा है।"

54

ओह, भाई, बहन, आप और मैं इस जगत में जिसमें हम रहते हैं, स्वयं ऐसा व्यवहार करें जैसे परमेश्वर के पुत्र व पुत्रियाँ करते हैं। हम यहाँ पर परदेशी हैं; परन्तु हमारा आचार-व्यवहार परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार होना चाहिए, कि हम परमेश्वर के पुत्र व पुत्री हैं। हमारा व्यवहार, हमारे कार्य-कलाप और वह सब कुछ जो हम करते हैं, परमेश्वर की उस व्यवस्था के अनुसार होने चाहिए जैसे परमेश्वर ने इसे यहाँ पर रखा है। और स्त्रियों के लिए पुरूषों के पहरावे पहनना एक घृणित बात है। किसी स्त्री के लिए बाल कटाना एक अशोभनीय और पापमय बात है। बाइबिल ऐसा ही बताती है। यहाँ तक कि उसके लिए ऐसे में प्रार्थना भी करना अशोभनीय बात है। आप कहते हैं, "इसके विषय में क्या है?"

55

अधिक समय नहीं हुआ है जब कोई (एक महान प्रख्यात प्रचारक) मेरे पीछे पड़ गया था, और उसने मुझ से कहा था, "भाई ब्रन्हम, आप आयें, मैं आप पर हाथ रखना चाहता हूँ। आप अपनी सेवकाई नष्ट कर रहे हैं। मैंने कहा, "क्या?"

बोला, "आप बाहर लोगों पर उस प्रकार से चीख-चिल्ला रहे हैं।

मैंने कहा, "मैं तो बता रहा हूँ...."

वह बोला, "ओह, मैं उसका विश्वास करता हूँ। मैं भी एक पिन्तेकोस्तल हूँ। मैं विश्वास करता हूँ, कि स्त्रियों को छोटे छोटे कटे बाल नहीं रखने चाहिए; उन्हें पैंट नहीं पहननी चाहिए, और इसी तरह के वे काम जो वो करती हैं उन्हें नहीं करने चाहिएं। उन्हें अपने चेहरे पर रंगों की लीपा-पोती नहीं करनी चाहिए। उन्हें वह सब नहीं करना चाहिए; परन्तु परमेश्वर ने आपको बीमारों के लिए प्रार्थना करने के लिए बुलाया है।"

मैंने कहा, "उसने मुझे सुसमाचार का प्रचार करने के लिए बुलाया है।" समझे?

और उसने कहा, "मैं इसका विश्वास करता हूँ। मगर उसने कहा, "तुम सोचते हों, कि...."

मैंने कहा, "यहाँ देखिए, कि तुम्हारे पास क्या है; तुम्हारे पास ये बड़े बड़े कार्यक्रम, टेलीविज़न तथा अन्य सभी कुछ है। मेरे पास कुछ नहीं है।"

परन्तु मेरे पास परमेश्वर है जो उत्तर देता है।" यह सच है। मैंने कहा, "मेरे पास और कुछ नहीं, वरन परमेश्वर है, जो उत्तर देता है।"

वह बोला, "मैं-मैं—मैं—तुम तो अपनी सेवकाई नाश कर लोगे।"

मैंने कहा, "कोई भी वह प्रचारक जो परमेश्वर के वचन का नाश करेगा, नाश हो जाना चाहिए।" यह सही बात है! यकीनन, यह पूर्णतः सच है।

वह बोला, "खैर, तुम इसे नाश कर लोगे।"

56

मैंने कहा, "तो फिर कौन इसे बतायेगा? (समझे?) किसी को तो इसे कहना ही है। किसी को तो उसके लिए जो सत्य है, खड़ा होना ही है, इससे कोई मतलब नहीं है, कि यह क्या चोट पहुँचाता है। और मित्रों, जैसाकि मसीही, जैसाकि लोग जो विश्वास करते हैं, कि हम स्वर्ग जा रहे हैं, पवित्र आत्मा तो स्वयं परमेश्वर के वचन में हमारा प्रतिचित्रण करेगा।"

उसने कहा, "क्या तुम जानते हो, कि तुम्हें क्या करना चाहिए?" बोला, "लोग विश्वास करते हैं, कि तुम एक भविष्यद्वक्ता हो। तुम्हें तो इन स्त्रियों को इन छोटी छोटी बातों को सिखाने की बजाये, यह सिखाना चाहिए, कि भविष्यवाणी का वरदान तथा इसी प्रकार के और दूसरे वरदान तथा और ज्यादा उत्तम वस्तुऐ कैसे प्राप्त की जायें।"

मैंने कहा, "मैं उन्हें बीजगणित